मैथिली मुहावरा एवं लोकोक्ति प्रकाश

श्री रमानाथ मिश्र "मिहिर"

विद्यापति प्रकाशन

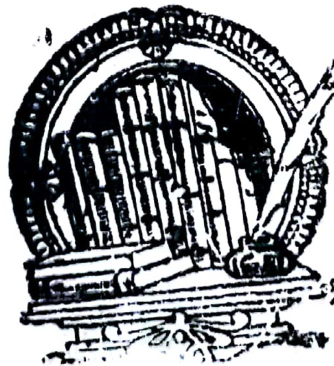
दरभंगा।

रामदेव झा
29.9.63

मैथिली मुहावरा एवं लोकोक्ति प्रकाश

प्रोफेसर डा० राम देव झा
"ओझा जी"
कें सस्नेह सप्रेम समर्पित।
श्री मिहिर
२०.१.८३

श्री रमानाथ मिश्र "मिहिर"



विद्यापति प्रकाशन

दरभंगा।

प्रथम संस्करण जनवरी १९६३

मूल्य १।)

मुद्रकः—चौधरी प्रिन्टिग एन्ड स्टेशनरी वर्क्स टावर चौक, दरभंगा।

डा० श्री पूर्णानन्द दास एम्० ए०, पी० एच० डी०

लिखैत छथि ......

मुहाबरा भाषाक प्रागैतिहासिक अलंकरण तथा लोकोक्ति अनुभव एवं अनुभूतिक अति प्राचीन न्यास कहल जाइछ। यैह कारण जे मानव-वाङ्मयक कोनो संचित निधि एहेन नहि जाहि मे एहि दूनूक प्रवेश नहिं भेल हो। एकर सम्यक् अध्ययन अत्यन्त आवश्यक। हर्षक विषय जे श्री रमानाथ मिश्र 'मिहिर' एकर संकलन एवं अध्ययनक हेतु प्रवृत्त भेल छथि। कवि भावक संग भाषाक शृंगार मे प्रवृत्त होथि ई साहित्यक हेतु शुभ लक्षण कहल जाएत। श्री 'मिहिर' जी क पोथी छोट किन्तु छात्रक हेतु अत्यन्त उपयोगी बुझना जाइछ। हमरा आशा एवं विश्वास अछि जे निकट भविष्य मे मेधावी लेखक प्रस्तुत विषय पर एक प्रामाणिक ग्रन्थ लिखि सकताह।

चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय पूर्णानन्द दास
दरभंगा ९-१-६३ (हिन्दी विभाग)

प्रोफेसर श्री शैलेन्द्रमोहन झा एम्० ए०
मैथिली स्नातकोत्तर विभाग
चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा।

लिखैत छथि....

श्रीयुत रमानाथ मिश्र 'मिहिर' द्वारा लिखित मैथिलीक मोहावरा ओ लोकोक्ति सम्बन्धी प्रस्तुत पोथी देखि अतीव प्रसन्नता भऽ रहल अछि। मोहावरा एवं लोकोक्ति कोनो भाषाक शृंगार मानल जाइछ।

मोहावरा मे भाषाक अभिव्यंजना शक्तिक चरम रूप देखल जाइत अछि। तहिना लोकोक्ति मे भाषाक अभिव्यंजना शक्तिक संग ओकर बजनिहारक युग-युगक अनुभूति सेहो संचित रहैत छैक। साधारण जीवनक व्यवहार मे तँ लोक बिनु प्रयासहिं सरलता पूर्वक एहि सभक प्रयोग करैत रहैत अछि। किन्तु साहित्यिक रचना मे एहि सभक समावेश रचनाकेँ जँ अर्थ पूर्ण बना दैत छैक तँ दोसर दिस रचनाकारक प्रतिभाक परिचय सेहो दऽ दैछ। प्रतिभा ओ मोहावरा एवं लोकोक्तिक समुचित प्रयोगक ज्ञान दुनूक रहब परम अपेक्षित अछि। प्रतिभा कोनो व्यक्ति मे देल नहि जा सकैछ। किन्तु मोहावरा ओ लोकोक्ति समुचित अर्थ ओ समुचित प्रयोगक ज्ञान कराओल जा सकैत अछि।

मैथिली मे अजस्र मोहावरा ओ लोकोक्ति भरल छैक। किन्तु ओकर संकलन, प्रकाशन तथा प्रसंगानुकूल समुचित प्रयोगक दिग्दर्शन करयबाक दिशा मे बहुत कम कार्य भेलैक अछि। श्री मिहिर जी मनोयोग पूर्वक ओहि दिशा मे कार्य करब प्रारम्भ कयलनि अछि। हमरा विश्वास अछि जे ओ एहि कार्य केँ एही पोथी धरि सीमित नहि राखि ओकरा आरो आगाँ बढ़ौताह।

प्रस्तुत पोथी मे मोहाबरा अर्थात् उपलक्षण तथा लोकोक्तिक संग अन्यो उपयोगी सामग्रीक संकलन कयलनि अछि जेना– अनेक शब्दक हेतु एक शब्द, श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द, द्व्यर्थक शब्द इत्यादि। एहि सभ सँ पुस्तकक महत्त्व आरो बढ़ि गेलैक अछि। एहन पुस्तक सकल छात्र वर्गक हेतु तँ उपयोगी अछिए, अध्येतो लोकनिक हेतु कम महत्त्वपूर्ण नहि कहल जा सकैछ।

एहि क्षेत्र मे श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क पोथी 'मोहावरा ओ लोकोक्ति' टा छात्र लोकनिक पथ प्रदर्शन करैत छलनि। ओहि मे मिहिर जी योगदान दऽ बधाइक पात्र बनि गेलाह अछि।

विश्वास अछि जे मैथिली प्रेमी तथा मैथिली छात्रगण एहि पोथीक हृदय सँ स्वागत करताह।

लहेरियासराय

१७-१-६३

शैलेन्द्रमोहन झा

प्रोफेसर श्री रामदेव झा एम्० ए०

अध्यक्ष

मैथिली विभाग।

संताल परगना कालेज, (दुमका)

लिखैत छथि ...

श्री रमानाथ मिश्र 'मिहिर'क मोहावरा ओ लोकोक्ति विषयक पोथी मनोयोग पूर्वक पढबाक अवसर भेटल। मोहावरा ओ लोकोक्ति भाषाक नैसर्गिक गुण मानल जाइत अछि। ओकरा ने क्यो बना सकैछ, ने मेटा सकैछ। ओ तँ युगक चाक पर निर्मित भऽ भाषाक भंडार मे संचित होइत जाइत छैक। जाहि सरलता एवं स्वाभाविकता सँ ओ जन सामान्य मे प्रचलित रहैत छैक, ठीक ओही रूप मे साहित्य मे प्रयुक्त करबा मे थोड़ेक श्रमक अपेक्षा होइत छैक। तेँ कोनो भाषा मे सुन्दरता पूर्वक लिखबाक हेतु अथवा लिखित साहित्यक मर्म धरि पहुँचबाक लेल ओकर प्रचुर मोहावरा एवं लोकोक्तिक ज्ञान रहब आवश्यक।

मैथिली मे मोहावरा ओ लोकोक्तिक अक्षय भंडार छैक किन्तु ओकर संकलनादिक प्रयास नहिञे जकाँ भेलैक अछि।

अतः श्री रमानाथ मिश्र 'मिहिर' जाहि श्रम ओ निष्ठा सँ ई पोथी प्रस्तुत कयलनि अछि से प्रशंसनीय अछि। छात्र लोकनिक हेतु उपयोगी बनयबाक लेल ई आरो कतिपय आवश्यक वस्तुक समावेश कऽ देलथिन अछि। एहि सँ ई पोथी महत्त्वपूर्ण भऽ गेल अछि।

आशा अछि, पोथीक हार्दिक स्वागत कयल जायत।

दुमका

१२-१२-६२ **रामदेव झा**

प्रो० श्री सुधाकान्त मिश्र एम० ए०

सम्पादक 'बटुक' इलाहाबाद—२ लिखैत छथि ....

श्रीयुत् रमानाथ मिश्र जो 'मिहिर' क नवीनतम पुस्तक मैथिली मुहाबरा ओ लोकोक्ति क मुद्रित प्रति देखि हार्दिक प्रसन्नता भेल-अछि। श्रीयुत् 'मिहिर' मैथिलीक नवका पीढ़ीक उदीयमान कवि ओ लेखक छथि। हिनक रचना समय-समय पर 'मिथिला मिहिर' "वैदेही" मिथिला-दर्शन ओ 'बटुक' मध्य हमरा पढ़बाक अवसर प्राप्त भेल अछि। हिनक ई नवका कृति मैथिलीक प्रत्येक विद्यार्थी वा भाषाक शुद्ध रूप बुझबा ओ लिखबा मे प्रवृत्ति जन साधारण तथा नव लेखक-लेखिकाक हेतु उपयोगी भेल छन्हि। एक्के ठाम लोकोक्ति, मुहावरा, भिन्नार्थक, एकार्थक, ओ द्वयर्थक शब्दक संग्रह भेने प्रायः अद्यावधि प्राप्त एहि विषयक समस्त पोथीसँ ई संग्रह नीक लागल। आशा अछि 'मिहिर' जी एहने ओ उपयोगी कृति सँ मैथिलीक भण्डार भरैत यश लाभ करताह! एहि संग्रह मे प्राचीनक संग-संग नवीन प्रकारक लोकोक्ति सेहो भेटैछ। तैँ भविष्य मे एकर उपयोग बढ़िते जायत! हमर शुभकामना।

१०-१-६३ **सुधाकान्त मिश्र**

दु टप्पी

मुहावरा एवं लोकोक्ति कोनो भाषाक आभूषण थीक, जाहि साहित्य कारक साहित्य मे जतेक मुहाबरा एवं लोकोक्ति रहल करैछ हुनकर साहित्य ततेक बेसी ललितगर कहल जाइछ। मैथिली मे एकर अभाव नहिं अछि जौं एकर संकलन नीक जकाँ कैल जाय तँ एक महा पोथा तैयार भऽ जैत। एहि रूपक सब सँ पहिल संग्रह स्वर्गीय विद्यानन्द ठाकुर द्वारा लोकोक्ति प्रकाशक नाम सँ प्रकाशित भेल। जौं-जौं एहि वस्तुक आवश्यकता पड़ै लागल अछि तौं-तौं विद्वान लोकनिक ध्यान एकरा संग्रह करबाक दिशि आकृष्ट होमै लागलन्हि अछि। एमहर आबि कै हमर पितृव्य पं० श्री चन्द्र नाथ मिश्र "अमर"क मुहाबरा ओ लोकोक्ति, आदरणीय श्री रमानाथ बाबूक मिथिला-भाषा प्रकाश एवं श्री युगेश्वर झा जीक मैथिली रचना नामक पुस्तक मे किछु-किछु देखबा मे ऐल अछि। मुदा तैयो छात्र-समुदाय क पियास नहिं मेटैल अछि कारण जौं-जौं मैथिलीक पठन-पाठनक प्रचार भऽ रहल अछि तौं-तौं एकर मांग बढ़ि रहल अछि। बहुत लोकोक्ति तँ एहन अछि जे लुप्त भेल जा रहल अछि कारण युगक अनुसार ई बनल करैछ आ तद्नुसारे प्रयोग होइछ।

जाहि व्यक्तिक साहित्य मे जतेक लोकोक्तिक समावेश रहैछ ओइ व्यक्तिक साहित्य ततेक जनकंठ मे टिकाउ सेहो रहल करैछ।

बहुत मुहाबरा एहन अछि जे कै गोट अर्थ व्यक्त करैछ मुदा ओ कहबा पर निर्भर करैछ, जेना माथ हाथ देब, माथा हाथ देव।

महाकवि विद्यापतिक रचना मे बहुतो एहन पंक्ति अछि जे साधारणतया लोकोक्ति भै गेल अछि। जेना :—

(क) भिन-भिन राज भिन्न व्यवहार।

(ख) परक वेदन पर बाँटि न लेइ। आदि

मुदा आधुनिक युगक साहित्यमे बड़ कम एहि रूपक लोकोक्तिक प्रयोग होइछ। चन्दा झा कृत मैथिली रामायण तँ सौंसे लोकोक्ति सँ भरल अछि, जकर प्रयोग हम आगू देखैब मुदा एहि ठाम उदाहरणस्वरुप देखू-

जेना—गाल मारब-रे दशभाल गाल की मारह
काल विवश नहिं तोहरा ज्ञान।

जीवित साहित्यकार मे कविवर सीताराम झा एवं श्री अमर जीक रचना मे अधिक ठाम एहि रूपक लोकोक्तिभेटैत अछि।

जेना—ऊँटक मुँह मे जीरक फोड़न।

पाव पसेरी चूड़ा अंकड़ा, दही छाँछ भरि जलखै जकरा।
की हो चटने पाव भरि जोड़न ऊँटक मुंह मे जीरक फोड़न
जरि गेल जौड़ जरि जाओ मुदा—
ऐंठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि ॥युग चक्र॥—श्रीअमरजी
कमाथि चड़द हकमथि कुकुर
भरि जन्म कमैला बड़द मुदा बैसल हकमै छाथ कुकुरेटा।
॥युग चक्र॥—श्रीअमर जी

अस्तु हम एहि संग्रह मे मात्र विद्यार्थीक योग्य किछु लोकोक्ति, मुहावरा, श्रुतिसम भिन्नार्थक एवं अनेक शब्दक एक शब्द आ द्वयर्थकक संग्रह कैलहुँ अछि। एहि मे अपन पितृव्य श्रीअमरजी, आदरणीय श्रीरमानाथ बाबू एवं श्री युगेश्वर झा जीक आभारी छिऐन्हि।

श्री रमानाथ मिश्र 'मिहिर'
खोजपुर (दरभंगा)

सामान्य उपलक्षण

१ अगड़ाही लगैब—(झगड़ा लगा देब) रामबाबू जौं अइ बुढ़ारी मे विवाह करताह तँ हम हुनका घरे मे अगड़ाही लगा देबैन्ह ।

२ अमौट घोरब—(ओझरौट लगैब) औ बाबू ! हिनका सँ ई पंचैती नहिं पार लागत तेना ने ई अमौट घोर लगताह जे सोझरैलो बात ओझरा जैत ।

३ अगिया वेताल—(साहसी) जही काज मे सुरेश के देखैत छियैक अगिया वेताल जकाँ लागि जाइत अछि ।

४ अपना पैर मे कुड़हरि मारब—(अपन हानि अपने करब) बूढ़ बर सँ अपना बेटीक विवाह कराक कथी लै अपना पैर मे अपने कुड़हरि मारब ।

५ अलग-अलग करब—(सब काज मे पहिने रहब) सीतारामक आङन मे जाकऽ अलग-अलग जुनि करह नहि तँ झगड़ाक सब दोष पहिने तोरे पर लगतह ।

६ अछाहे कुकुर भूकब—(कनिञो आभास पाबि ककरो विरुद्ध बाजब) बिना नीक जकाँ बात बुझने एना अछाहे कुकुर नहिं भूकल करह ।

७ *अस्सी मोन पानि पड़ब*—(कोनो काज करबा सँ असमर्थ हैब) जहाँ कोनो काज एकरा करऽ कहबैक की अस्सी मोन पानि पड़ि जयतैक।

८ *अँटकरे गीता पाठ करब*—(बिनु ज्ञाता भेनहि कोनो वस्तुक परिचय देब)—ओइ सभा मे सब पढ़ले लिखल लोक अछि तैँ अँटकरे गीता पाठ कैने काज नहिं चलत।

९ *आगि मे घी देब*—(क्रोध मे और बेसी क्रोध उत्पन्न करब) एक तँ आइ बाप एखन धरि नहिं खैलथुन्ह अछि तैँ भिनसर सँ तमसैल छथुन्हे तइ पर सँ पैसा मंगबहुन, कथी लै आगि मे घी ढारबहुन।

१० *आकाश फाटब*—(चारू कात सँ झंझट उपस्थित हैब) हमर तँ अकाशे फाटल अछि कतबो कमैब एकरा लोकनि चैन नहि होमै देत।

११ *आकाश पताल एक करब*—(कोनो वस्तुक अन्वेषण सँ बाज नहिं ऐब) सीता के तकबाक लेल हनुमानजी आकाश पताल एक कै देलनि।

१२ *आरि बान्हब*—(पहिने सँ तैयारी करब) उपेन्द्र बाबू जे एतेक काल सँ आरि बान्हि रहल छथि तै मे किछु रहस्य अवश्य अछि।

१३ *आँचर ओड़ब*—(भीख माङब) हमरा लग मे आँचर ओड़ने की भेटत जाउ दोसर आङन।

१४ *इदिर बिदिर करब*—(निरर्थक काज करब) भरि दिन इदिर बिदिर कैला सँ जीवन चलब कठीन छइ, किछु किछु घरोक काज धंधा देखल करइ।

१५ *उठौन हारब*—(बेसी कमजोर हैब) तेना ने मलेरिया पछाड़लक जे मास दिन सँ घर पर बैसल उठौन हारि रहल छी।

१६ *उरि बिरी लागब*—(चिन्ता लागब) जहिया सँ गामक झगड़ा बला समाद बुझलहुँ अछि तहिया सँ उरी बिरी लागि गेल अछि।

१७ *उनचासो बसात बहब*—(चारू कात सँ बिपत्ति पड़ब) लंका मे जखन आगि लगलैक तखन उनचासो बसात बह लगलैक।

१८ *उफाँटि हैब*—(लक्ष्य दिशि नहिं जा दोसर दिशि जैब) पचीसी मे जनिकर गोटी उफाँटी होइत छन्हि ओ निश्चय हारि जाइत छथि।

१९ *कन्नी काटब* (काज सँ नुकैब) बौआ ! जौँ हमरा बेर मे कन्नी कटबैं तँ तोरो बावीक सराध मे हम सब कोनो गोटे नहि जेबौ।

२० *कोड़ो गनब*—(समय बितैब) हमरा सँ की हैत हम तँ अपने खाट पर पड़ल-पड़ल कोड़ो गनैत रहैत छी।

२१ *कोल्हुक बड़द हैब*—(भरि दिन काज करैत रहब) हमरा की कखनो छुट्टी भेटैत अछि भरि दिन कोल्हुक बड़द भेल रहैत छी।

२२ *काल बेसाहब*—(अपने सँ विपत्ति आनब) आइ जे भागिन के एहि ठाम सँ हटबऽ चाहैत छी से ई काल बेसाहल तँ अपने थीक।

२३ *खेखनिआ करब*—(ककरो खुशामद करब) हमरा सँ खेखनिआ करब पार नहिं लागत हम अपने बड़ बेसी घमंडी छी।

२४ *खोइचा छोड़ब*—(स्पष्ट गप्प कहब) हमर गप्प एहिना खोंइचा छोड़ैल होइत अछि जकरा नहि नीक लगै से हमरा ओइ ठाम नहिं आबौ।

२५ *खापरि फोड़ब*—(अशुभ सोचब) हमरा नामे खापरि फोड़ब से अपने बेटाक नामे फोड़ू ने।

२६ *खाधि खूनब*—(अधलाह काज करब) जैह खाधि खुनैत अछि सैह खसैत अछि ओकर फल ओकरे भेटैत छैक।

२७ *खिमा खसैब*—(अड्डा जमैब) कड़ोरिया जइ ठाम जैत तइ ठाम खिमा बिना खसौने नहिं रहत।

२८ *खाल खिंचब*—(नीक जकाँ दाम वसूलब) चमार माल जालक खाल खिंचि कै छोड़ैत अछि।

२९ *गोटी लाल करब*—(अपन काज सुतारब) गरीबबाबू बेटाक बियाह-दान कराक अपन गोटी लाल कैलथुन्ह, आब तों की करैत छह से देखा चाही।

३० *गबधी लगैब*—(अनठा देब) देखि रहल छैक जे अङना मे दूनू भाङि लड़ि रहल छैक आ बुढ़बा गबधी लधने दलान पर बैसल अछि।

३१ *गूह गीजब*—(तामसे अनुचित काज क लेब) सीरी बाबू अपना बेटाक चालि पर ततेक तमसैल छथि जे गूह गीजबा पर तैयार छथि।

३२ *गाल फुलैब*—(रूसि रहब) छोट नेना कें जहाँ क्यौ किछु कहौक की लगले गाल फुला लेत।

३३ *गाल फुटब*—(बजन्ता हैब) जंगली दाइक जमाय कें अइ बेर बेस गाल फुटि गेलन्हि अछि।

३४ *गीरह बान्हब*—(स्मरणार्थ चेन्ह देब) हमर बात एखन नहि नीक लगैत छह मुदा गीरह बान्हि लैह जे तोरा लोकनिक दुर्दशा जे हैतह से जे रहत से देखत।

३५ *गाराँक घेघ हैब*—(भार हैब) ई छौड़ी आब कहिआ सासुर जैत से नहिं बूझि पड़ैत अछि, हमरा गाँराक घेघ भेल अछि।

३६ *घाव पर नोन छीटब*—(दुःख मे और दुःख देब) पहिने घर मे चोरि भ गेलन्हि तकरा बाद समर्थ बेटा मरि गेलन्हि भगवानो घाव पर नोने छिटैत रहैत छथिन्ह।

३७ *घर घूमैब*—(परास्त करब) उत्तो बाबू कारी बाबू के कहलथिन्ह जे निरसन बड़ तमसैल अछि बिना घर घुमौने नहिं छोड़त।

३८ *घाठि पोटा उठब*—(जे नहिं हैबाक सेहो हैब) अही बेरुक मोकदमा मे तँ हम घाठि पोटा सौँ से चमरटोलीके करा दैत छियैक।

३९ *घीक दीप जरैब*—(आनन्द मनैब) हे भगवती जौँ हमरा बेटा हैत तँ हम घी क दीप जरा कै पातड़ि देब।

४० *घिसिऔड़ काटब*—(बेसी दिन धरि दुःखित रहब) शम्भूक नानी मर बिना आब घिसिऔड़ कटैत छथिन्ह ।

४१ *चर्खी औंटब*—(बिना काजे भरि दिन बाजब) ई बुढ़या काज धन्धा करत किछु ने आ भरि दिन चर्खी औंटने रहैत अछि।

४२ *चालि चलब*—(कोनो उद्देश्यक पूर्तिक लेल यत्न करब) जाहि सँ हमरो ओइ ठाम ई सब आबि जाथि तेहेन चालि चल दिअऽ ।

४३ *चारू नाल चित्त हैब*—(पराजित भ जैब) तेहेन चालि चलि देलियैन अछि जे सौँसे गाँआ चारू नाल चित्त भ जैताह ।

४४ *छान तोड़ब*—(बड़ बेसी उत्सुक हैब) हौ ! एना छान तोड़ने काज नहिं चलतह हमरा पटना सँ आबै दैह तँ तोहर काज भय जैताह ।

४५ *छाल छोड़ैब*—(तंग करब) पोथीक लेल छौंड़ा सब छाल छोड़ौने रहैत अछि ।

४६ *छौ पाँच करब*—(द्वन्द मे पड़ब) छुट्टी मे गाम जाउ की सासुर मोन छौ पाँच क रहल अछि ।

४७ *छिछरी पटिया उठब*—(अस्त व्यस्त हैब) टुन-टुन भिनसर सँ कत गेलैक कोनो पता ने लगैत छैक आङन मे छिछरी पटिया उठल छैक ।

४८ *छनक मनक हैब*—(भोजनक विन्यास हैब) आइ भोरे सँ नारायणपट्टी बालीक आङन मे छनक-मनक होइत छन्हि ।

४९ *जीह कुड़ियैब* - (मधुर खैबाक अग्रिम सूचना भेटब) नूनू आङन मे भार देखिते बाजि उठल आइ भोरे सँ हमर जीह कुड़िआइत छल, कहैत छलहुँ जे एखन करऽ स मधुर औंत ।

५० *जीह पनियैब*—(पेट मे चाली हैब) छोटका बच्चा के जीह पनिआइत रहैत छैक, कतेक दिन सँ कहैत छियान्हि जे दबाइ मङा दिऔक से नहिं पार लगैत छन्हि ।

५१ *जीह कुचब*—(गल्ती स्वीकार करब) कालीक पैर, महादेब पर पड़ैत देरी ओ जीह कूचि लेलन्हि ।

[नोट :—जीह पर शेष मुहाबरा अंग सम्बन्धी में देखू]

५२ *जहरक घोंट पीब* (भीतरे भीतर क्रोध केँ दबैब) अपना सँ ओ जेठ छथि तैँ हम जहरक घोंट पीबि कै रहि जाइत छी, ने तँ तेहेन उत्तर दितियैन जे मांस लगले रहितन्हि हड्डी गलि कऽ खसि पड़ितन्हि ।

५३ *जुआरि ऐब*—(दुःखक आवेग ऐब) कोना-कोना क आश्रम लगौलहुँ आ ई दूनू बेकती तकरा बेचि-बेचि चटने जाइत अछि से देखि-देखि जुआरि उठैत अछि ।

५४ *झाम गूड़ब*—(बेकार भेल रहब) जहिया सं नोकरी छुटलनि अछि गाम पर बैसल झाम गुड़ैत छथि ।

५५ *झाउँ-झाउँ करब*—(निरअपराध ककरो पर बाजब) चुमनाक घर बाली जहाँ बोनि मङलकैन की चारू कात सँ सब माइ-पुते ओकरा पर झाउँ-झाउँ कऽकऽ उठलथिन्ह ।

५६ *टाङ मोड़ब*—(विश्राम करब) भरि दिन दौड़-धूप करैत-

करैत अकच्छ छी, एकरत्ती टाङ मोड़बाक छुट्टी नहिं भेटैत अछि।

५७ टेक *राखब*—(मर्यादाक रक्षा करब) सौंसे गाम आन गाम सँ जैवारी मे खा अबैत छियैक, मुदा कै गोटे एहन छी जे अन-गौआ के खोअबैत छियैक ? ईहो टेक एखन उमेशे बाबू रखने छथि।

५८ *टाल ठोकब*—(लड़बाक हेतु उद्यत हैब) पहलवान सब टाल ठोकि अखाढ़ा पर अबैत अछि।

५९ *टेढ़ी देखैब*—(घमण्ड मे चूर रहब) हमरा जे धनक टेढ़ी क्यौ देखौताह से की हम ककरो सँ कम छी ?

६० *ठेला पड़ब*—(अभ्यस्त हैब) एहेन एहेन गाछ तँ हम एक घण्टा मे काटिकऽ खसा देब, हमरा तँ ठेला पड़ल अछि।

६१ *डारि पात धरब*—(गप्प मे पछाड़बाक चेष्टा करब) औ बाबू ! भूत जकाँ डारि पात नहिं पकड़ू हम सबटा बुझैत छी हमरा पछाड़बाक कोशिश नहिं करू।

६२ *डाकैन देब*—(साप कटला पर जोर-जोर सँ मन्त्र उच्चारण करब) राति उतरवारि टोल पर डाकैन पड़ैत छलै बुझि पड़ैत अछि ककरो साप कटने छलैक।

६३ *डोरी ढील करब*—(देखरेख मे कमी करब) राजकाज चलैबा मे डोरी ढील करब नीक नहिं थीक।

६४ *ढोल पीटब*—(प्रचार करब) पुतोहु एक रत्ती चोराकऽ खा लेलकन्हि तइ लेल सौंसे ढोल पीटने फिरैत छथि।

६५ *ढेकरब*—(तृप्त सूचक ध्वनि) अछिनरे अनकर अन्न खा कऽ ढेकरैत रहैत अछि।

६६ *तिलांजलि देब*—(त्यागि देब) राज-पाट के तिलाञ्जलि दऽ कऽ भगवान बुद्ध तपस्या करक लेल चल गेलाह।

६७ *तीलक तार करब*—(छोट बात के भयंकर बनैब) चारिटा की पाँच टा ई छौड़ाँ माछ मारलक तकरे हिनका लोकनि तीलक तार बनौने छथि

६८ *तान टुटब*—(क्रम भंग हैब) गीत गैवा काल जौं तान टुटि जाइक तं फेर गैबा मे बड़ कठिनता होइत छैक।

६९ *तारा गनब*—(कछु मछु क राति बितैब) मिसर टोलीक नोतक भरोसे किन्नहुँ ने रहक चाही नोत ऐल तँ भानस बन्द करबा देलियैक आ भरि राति तारा गनिकऽ प्रात कैल।

७० *थाह पैब*—(गन्तव्य स्थान धरि पहुँचब) औ बाबू ! धन्य अछि अहूँक गाम चलैत चलैत एखन आबिकै थाह भेटल अछि।

७१ *दम मारब*—(सुस्तैब) लगातार कार्य व्यस्त रहबाक कारणेँ दम मारबाक फुरसति नहिं भेटल छल।

७२ *दालि दरड़ब*—(बलजारी करब) हमरे ओइठाम रहि कै हमरे छाती पर दालि नहिं दरड़ह।

७३ *दिन घूरब*—(नीक समय देखब) जहिया सँ पनिचोभ वालीक बेटा नोकरी करऽ लगलैक अछि ओकरो दिन घूरि गेलैक अछि।

७४ *दूनू पानि मारब*—(दूनू गाँल मे रहबाक इच्छा करब) चलाक आदमी दूनू पानि मारक इच्छा रखैत अछि।

७५ *दालि गलब*—(काज बनब, बस चलब) आनका लग मे जे मन फुरै से करू मुदा हमरा लग ककरो दालि नहिं गलत।

७६ *दिन गनब*—(आशाबाटी ताकब) रमेशक बाप दिन गनैत रहैत छथिन्ह जे कहिया बेटा औताह।

७७ *धुरखुड़ नोचब*—(कचकचैब) आइ काल्हुक लोक कें जेह फुरतैक करत सैह, तखन हमरा लोकनिकें धुरखुड़ नोचने कोन लाभ।

७८ *धरोहि लागब*—(एकक बाद एकक चलब) पिपरा घाटक मेला देखक लेल आध पहर रातिए सँ लोकक धरोहि लागल छैक।

७९ *धरना देब*—(कोनो काजक लेल डटि कै बैसब) सौंसे गामक लोक महादेवक मन्दिर पर धरना देने अछि जे जावत बर्षा नहि हैत तावत नहिं उठब।

८० *नोन खैब*—(ऋणी हैब) हम तोहर नोन खैने छिअह जे भरि दिन रहबह ?

८१ *नोन चटैब*—(मारबाक चेष्टा करब) जौं ई जनितहुँ जे ई छौड़ा एहन कपूत हैत तँ सोइरियें मे नोन चटा दितियैक।

८२ *नौ छौ करब*—(निर्णय करब) जौं सौंसे टोलक विचार हो तँ हम आइ अपना मोकदमाक नौ-छौ कऽ ली।

८३ *नौ दू एगारह हैब*—(डरे भागि जैब) पहिलुका लोक सिपाही कें देखिते नौ दू एगारह भऽ जाइत छल।

८४ *नानी मरब*—(डर हैब) भूतक नाम सुनिते छोट नेना केर नानी मरै लगैत छैक।

८५ *पाग खसैब*—(मर्यादा नष्ट कै देब) मधुकान्त भीख माङि कै गामक पाग खसा देलक अछि।

८६ *पति करनी छोड़ब*—(प्रतिष्ठा रखबाक हेतु अन्य क्रिया करब) मोहन भोज की करताह, कहुना पति करनी छोड़ौलन्हि अछि।

८७ *पिंड छोड़ैब*--(छुटकारा पैब) तेहेन फँचाड़ि लोक सँ बाट मे भेट भेल जे कोनहुना ओकरा सँ पिंड छोड़ा कै ऐलहुँ अछि।

८८ *फूल सूघंब*—(कम खोराकी हैब) आइ काल्हि तँ नरेशक बेटा फूलेसूघिं कै रहैत छैक।

८६ *फुटलो आँखि ने सोहैब*—(एकदम नहिं नीक लागब) आइ काल्हुक मौगीक फैसन ने तँ हमरा फुटलो आँखि ने सोहाइत अछि।

६० *फूकि कै पहाड़ उड़ैब*—(जे काज नहिं होमए बला हो तकर कल्पना करब) शोभा पहलवान के कोना एकरा लोकनि हरौतैक, तोरो गप्प होइत छह जेना फूकि कै पहाड़ उड़बै बला।

६१ *बीड़ा उठैब*—(जवाबदेही लेब) सौ सें गामक लोकके एकट्ठा करबाक बीड़ा के उठौत।

९२ *बनरघुड़की देखैब*—(प्रभावहीन धमकी देब) गुनी जे फुचुर कें बनरघुड़की देखौथिन्ह से की ओ हिनका सँ कमजोर छन्हि ?

६३ *बात बनैब*—(अनेरे बैसल गप्प करब) आइ काल्हुक छौंड़ा सब बात बनेंबा मे बेस चतुर मुदा काजक बेर मे कथी लै कोनो काज करत।

६४ *बम बाजब*—(सब सठि जैब) सुनैत छलहुँ जे गरीब बाबू कें बैंक मे येह रुपया जमा छन्हि, वैह छन्हि आ एक्के टा बेटीक वियाह मे बम बाजि गेलन्हि।

९५ *झगड़ा फुटब*—(भेद फुजब) बेचन आ फेकू मे झगड़ा भेलन्हि को सब बातक भंडा लगले ने फुटि गेलन्हि ।

९६ *भेड़ियाधसान हैब*—(बहुसंख्यकक बोध हैब) अइ बेर कॉंग्रेसक अधिवेशन मे भेड़ियाधसान लोक पटना गेल छल ।

९७ *भक लागब*—(औंघी लागब) भाङ पीने सतत् देबू के भक लगले रहैत छन्हि ।

९८ *माछी मारब*—(बेकार भेल रहब) जहिया सँ नोकरी छुटलन्हि अछि तहियासँ गाम पर बैसल माछी मारैत रहैत छथि ।

९९ *मोम हैब*—(द्रवित हैब) मसुरीक दालि लगबैत देरी मोम भऽ जाइत अछि ।

१०० *मकड़ी ऐंठब*—(कोनो काज नहिं होमए देब) जौं कनेक हम मकड़ी ऐंठि दियैन्हि तँ कथीलै अइबेर हिनका एको टा भोट भेटतन्हि ।

१०१ *रंग उड़ब*—(फीका पड़ब) मोहन बापक संग झगड़ा करिते छलकी मास्टर केँ देखिते रंग उड़ि गेलैक ।

१०२ *रंग मे भंग*—(विघ्न उपस्थित हैब) छौंड़ा जन्म लेलकैक तँ सौंसे गामक लोक खुशी भेल, आ छठियारक बाद मरि गेलै से सौंसे गामक रंग मे भंग भऽ गेलैक ।

१०३ *रड़धुम्मस करब*—(अस्त-व्यस्त कैने रहब) भरि दिन छौंड़ा सब अइ ओछौन पर रड़धुम्मस कैने रहैत अछि ।

१०४ *लोहा लेब*—(युद्ध करब) भारतवर्षक रक्षा करबाक

लेल देशक एक-एक टा बच्चा चीन सँ लोहा लेवाक लेल तैयार अछि।

१०५ *लोहा मानब*—(अधीनता स्वीकार करब) धर्मक काज मे भारतवर्ष ककरो लोहा नहिं मानि सकैत अछि।

१०६ *लंका कांड मचब*—(मारि पीट हैब) जहिया सँ दामोदर पुर वाली ऐलैक अछि तहिया सँ आङन मे लंकाकांड मचौने रहैत छैक।

१०७ *लस्सा लगैब*—(ओझरौट लगैब) टुनटुन कहिया दरभंगा गेला मुदा घुरि कैं ऐबाक कोनो बाटे ने जेना ओइ ठाम कोनो लस्सा लागि गेल होइन्हि।

१०८ *शेखी झाड़ब*—(इज्जति उतारब) बेला वाली के एको रत्ती अपना मोन मे विचार नहिं जे बूढ़ भऽ कऽ हमरा नेना पर हाथ उठौलन्हि, हमरा लग औतीह तँ शेखी नहिं झाड़ि दियैन्हि तँ फेर हमर नाम नहिं।

१०९ *श्रीगणेश करब*—(प्रारम्भ करब) मड़बा पर बरुआ सब आबि गेल तँ उपनयनक श्री गणेश होऔ ने।

११० *सात घाटक पानि पीब*—(विशेष प्रकारक अनुभव हैब) हौ! गोपाल ठाकुर देबू क संग एमहर ओमहरक गप्प जुनि करहक ओ अपने सात घाटक पानि पीने अछि।

१११ *सोम बनब*—(कंजूस हैब) दाता सँ सोम नीक जे झट दै देथि जवाब।

११२ *सिंघ तोड़ि पड़रू मे मिलब*—(पैत्र मै छांटक संग रहब) अहूँ बाबा आब की सिंघ तोड़ि पड़रू मे मिलऽअवैत छी।

११३ *हथोड़िया देब*—(अनठेकानी काज करब) पानि मे मोहनक रुपैया खसि पड़लन्हि भरि दिन हथोड़िया देलन्हि मुदा कथी लै भेटतन्हि।

११४ *हँस्सी हैब*—(कलंक हैब) आइ भगवानक मन्दिर पर हिनका दूनू भाञ्जिक झगड़ा पर लोक हँस्सी उड़बत छलन्हि, आ तैयो ई दूनू गोटे लड़िते छलाह।

११५ *हँ मे हँ मिलैब*—(खुशामद करब) हमरा जौँ क्यौ कहताह जे उमेश बाबू के हँ मे हँ मिलयबाक लेल से हमरा सँ नहिं पार लागि सकैत अछि।

११६ *ज्ञान झाक योग देब*—(बुद्धि सँ काज करब) औ बूड़ि कने ज्ञान झाक योग दऽ कऽ बुझिऔक, ने तँ सब ठाम ठकाइते रहब।



अङ्ग सम्बन्धी–

१ टीक

१ *टीक कटैब*—(वंशक प्रतिष्ठा नष्ट करब) जौँ अपन टीक अपने कटा लेब तँ लोक कतेक काल धरि रक्षा करत।

२ *टीक काटब*—(ठकि लेब) मजबाक दोकान पर नहिं जाइत जाह भिड़ाक टीक काटि लेतह।

३ *टीक हाथ मे लेब*—(बशीभूत क लेब) शम्भू किन्नहुँ एमहर ओमहर करत से नहिं हेतैक, ओकर टीक तँ हमरा हाथ मे अछि।

४ *टिकासन चढ़ैब*—(बहुत बहसैब) धीया-पूता केँ ततेक टिकासन पर चढ़ौने रहैत छथिन्ह जे सब बूड़ि भेल जा रहल छन्हि।

५ *टीक ठाढ़ हैब*—(क्रोध हैब) तारा बाबू के जौँ एहि बातक खबरि हेतनि तँ तुरन्ते हुनकर टीक ठाढ़ भऽ जेतन्हि।

६ *टीक ओझरैब*—(लट्टी-पट्टी लगा देब) देबू के कोना नीक लगैत छन्हि जे कागज पत्र लऽ कऽ बैसल सबहक टीक ओझरौने छथिन्ह।

७ *टीक उनटैब*—(अभिमान हैब) भोकरन झाक बेटा जहिया सँ कलकत्ता गेलन्हि अछि तहिया सँ टीक उनटौने रहैत छथि कथी लै ककरो मनुक्ख कहथिन्ह।

८ *टीक खोलब*—(संकल्प लेब) चाणक्य नन्दवंशक नाश करबाक लेल अपन टीक खोलि लेने छलाह।

२ कपार

९ *कपार खैब*—(तंग करब) हौ बूढ़ि ! हमर कपार कथि लै खाइत छह ? जाह ने माय सँ लऽ लीह।

१० *कपार ठोकब*—(भाग्य पर झुझुऐब) बलभद्र जखन पाँच बेर सौराठ सँ घूमि ऐलाह तँ कपार ठोकि घर बैसि रहलाह।

११ *कपार फुटब*—(अभागल हैब) जकर कपार फुटि जाइत छैक तकरा आगूक अन्न किन्नहुँ ने भोग होइत छैक।

१२ *कपार फोड़ब* - (शोक व्यक्त करब) आब कपार फोड़ने की हैत ! जे चल गेल से की घूमि कऽ औत ?

१३ *कपार दुरुस्त रहब* (भाग्य चमकैत रहब) हमरा गाम मे एखन सब सँ बेसी महेन्द्र बाबूक कपार दुरुस्त छन्हि।

३ माथ

१४ *माथ उठैब*—(गौरवान्वित हैब) तेहेन-तेहेन काज एकरा लोकनि कऽ लैत अछि जे कतहु माथ उठैब से नहिं होइत अछि।

१५ *माथ पटकब* - (पश्चात्ताप करब) जे बस्तु नष्ट भऽ गेल ताहि लेल माथ पटकने की हैत, ओ घूरि कऽ की औत ?

१६ *माथ मुड़ैब*—(काजक लेल व्यस्त भेल रहब) भरि दिन स्कूलक उन्नति कोना हैतैक ताहि लेल देबू बाबू माथ मुड़ौने रहैत छथि।

१७ *माथ भुकैब*—(तंग करब) ई छौंड़ा सब भरि दिन अन्ट-सन्ट गप्पक लेल माथ भुकौने रहैत अछि।

१८ *माथ हाथ देब*—(सोच मे पड़ब) ई तँ पहिने सोचक चाही जे एहि झगड़ा मे पड़ी की नञि आब माथ हाथ देने कोन लाभ।

१९ *माथा हाथ देब*—(शुभाशिर्वाद देब) राति कै ई बच्चा ततेक डेराइत रहैत अछि जे मरऽ लगैत अछि, पंडितजी आबिकऽ कने माथा हाथ दऽ जइतथिन्ह।

२० *माथा हाथ देब*—(मूड़ि लेब) की हौ एतेक रास चाउर कोना परि लगलह ? ककरो माथा हाथ देलहक अछि ?

२१ *माथ पाग खसैब*—(प्रतिष्ठा नाश करब) बूढ़ बरक संग अपना बेटीक बियाह कराकै सीताराम बाबू सौंसे गामक माथ पाग खसा देलन्हि।

२२ *माथ धूनब*—(पश्चात्ताप करब) आब माथ धुनने की हैत देबहि बेर मे सोचि लेबाक चाहै छल ने।

४ भहुँ

२३ *भहुँ चढ़ब*—(क्रोध हैब) हम किन्नहुँ ने रुपैया मङबन्हि जहाँ हमरा देखत छथि की हुनकर भहुँ चढ़ि जाइत छन्हि।

५ आँखि

२४ *आँखि लागब*—(तंद्रिल हैब) आँखि लगले छल की चोरक हल्ला सुनि कै उठि जाय पड़ल।

२५ *आँखि मारब*—(इसारा देब) राम लक्ष्मण के कतबो आँखि मारलथिन्ह जे परशुराम के एहेन कटुबचन नहिं कहिऔन से नहिं बुझलथिन्ह।

२६ *आँखि देखैब*—(भय देखैब) हमरा जे आँखि देखौताह तिनकर दूनू आँखि हम फोड़ि देबन्हि।

२७ *आँखि मुनब*—(कोनो काज सँ मोन हटैब) अहाँ हमरा काज मे आँखि मुनने छी तैँ, ने तँ भऽ गेल रहैत।

२८ *आँखि लगैब*—(कुदृष्टि देब) हे दाइ ! हम कहि दैत छी हमरा नेना पर नञि क्यौ आँखि लगाउ।

२६ *आँखि चढ़ब*—(निशां मे डूबल रहब) ततेक भाङ पीबि लैत छथि जे भरि दिन आँखि चढ़ले रहैत छन्हि।

३० *आँखि फड़कब*—(शुभ वा अशुभ केर सूचना भेटब) आइ भिनसरे सँ हमर आँखि फरकैत अछि की हैत से नञि जानि।

३१ *आँखि उठब*—(एक प्रकारक रोग हैब) मास दिन सँ आँखि उठल छैक आँजन बना देबैक से नहि।

३२ *आँखि मे राखब*—(बड़ प्रिय लागब) मोन होइत अछि एहि नेना केँ अपना आँखि मे रखने रही।

३३ *आँखि लाल पीयर करब*—(क्रोधक पराकाष्ठा हैब) हमरा पर जे आँखि लाल पीयर करैत छी से की हम अहाँक पोथी लेलहुँ अछि ?

३४ *आँखि लड़ैब*—(विचारक आदान प्रदान करब) उमेश बाबू सँ एक कनमा धान मङबैन से ओ तावत धरि नहिं देताह जावे दूनू भाञि आँखि ने लड़ौताह।

३५ *आँखि पथरैब*—(प्रतीक्षा मे रहब) अहाँक बाट तकैत-तकैत हमर आँखि पथरा गेल।

३६ *आँखि चोरैब*—(दृष्टि बचैब) कोना कऽ आँखि चोराक हमरा लग सँ ई रुपैया पार कऽ देलक से नहि जानि।

३७ *आँखि मे पानि राखब*—(ककरो उपकार मोन राखब) सतलखा वाली के तँ आँखि मे पानिएँ ने रहैत छन्हि ने तँ अपना ओइठाम पाहुन ऐल छलन्हि तँ औँटल दूध देने छलियैन आ आइ हमरा काज भेलै तँ दामो देलापर देब लेल नञि तैयार भेलीह।

३८ *आँखि चोन्हरैब*—(कमजोरी हैब) हम आइ भरि दिन सहल छी हमर आँखि चोन्हराइत अछि, हम किन्नहुँ ने बजार जैब।

६ कान

३९ *कान पकड़ब*—(सपत खैब) हम आइ दिन सँ कान पकड़ैत छी जे फेरो तोरा कोनो काज करऽ कहियह।

४० *कान भरब*—(निन्दा करब) खोजपुर वाली भरि दिन ठाढ़ी वालीक कान भरिते रहैत छथिन्ह, ताहि दुआरे बेटाक संग सतत ओकरा झगड़ा होइते रहैत छैक।

४१ *कान काटब*—(पराजित क देब) ई तँ गप्प करबा मे केहनो चूढ़-सूढ़क कान काटि लैत छन्हि।

४२ *कान ठाढ़ हैब*—(सतर्क हैब) नेरुक हुँकरब सूनि गाइक कान लगले ठाढ़ भ जाइत छैक।

४३ *कान देब*—(कोनो गप्प के नीक जकाँ सुनब) हमरा गप्प कें तँ ओ कोनो काने बात ने दैत छथि।

७ नाक

४४ *नाक दरड़ब*—(बेर-बेर खुशामद करब) हम एक बेर माङ्ग लेल गेल छलियैन्हि आब फेर हम नाक दरड़क लेल नहि जेबैन्हि।

४५ *नाक भाङब*—(हतोत्साह करब) कोनो काज करक लेल बिदा हैब की पट्ट दऽ हिनका लोकनि नाक भाङऽ लगताह।

४६ *नककटौन हैब*—(बेइज़्ज़तिक लोक हैब) हमरा सासुर बला सब एक सँ एक नककटौन सब अछि बेटीक बियाह कराकै दुरागमन कै देबाक इच्छे ने रखैत अछि।

४७ *नाकक केश हैब*—(अति प्रियगर हैब) धीया-पूता माइ बाप केर नाकक केश होइत छैक।

४८ *नाकक सूत पानि पिऐब*—(तबाह करब) एही मोकदमा मे तँ हम बरही बला नें नाकक सूत पानि पियाक छोड़बन्हि।

४९ *नाक पर माछी नै बैसदेब*—(अस्वीकार करब) अहाँ लोकनि जे मूनि बाबू के एतेक चन्दा बान्हि देलियैन्हि अछि से एको बेर ओ नाक पर माछी नञि बैसऽ देताह।

५० *नाक भहुँ सिकुड़ब*—(घृणा करब) अम्मत तीमन तरकारी देखिते एकरा लोकनि नाक भहुँ सिकुड़ै लगैत अछि।

८ ठोर

५१ *ठोर पटपटैब*—(वाणी स्पष्ट नहिं हैब) दामोदर पुर बाली के ओतेक घर बला मारलकैक मुदा कथी लै मौगी एक्को बेर ठोर पट पटौतैक ।

५२ *ठोराहि हैब*—(बड़ बेसी बजनिहारि हैब) खजौली बाली भारी ठोराहि छैक एक बेर घर बला कहैत छैक तँ सात बड़ ओ कहि दैत छैक ।

५३ *ठोर सुखैब*—(उदास हैब) कहह तँ ! एक भिनसर कालेज गेलह से ऐबाक कोनो बाटे नहि, ठोर सुखा गेलह अछि ।

५४ *ठोर चाटब*—(बड़ बेसी दुलार करब) भरि दिन अहींक ठोर चटला सँ हमर गुजर नहिं हैत ।

५५ *ठोर बहसब*—(बजबाक ठेकान नहि रहब) तेहेन ने हिनकर ठोर बहसल छन्हि जे ककरो लग निर्वाह भेनाइ कठिन छन्हि ।

५६ *ठोर फरकैब*—(अतिशब क्रोध हैब) हमरा पर बेसी ठोर जुनि फरकाउ, हमर कोनो दोष एहि मे नहिं अछि ।

९ दाँत

५७ *दाँत देखैब*—(अपन असमर्थता देखैब) हमरा आगू मे दाँत देखौने की हैत जाउ बड़का गाम बला लग मे ।

५८ *दाँत पीसब*—(तामस हैब) भरि दिन सब पर दाँत पिसैत रहैत छथिन्ह ।

५९ *दाँत कड़रब*—(अभिशाप देब) ततेक ने सौंसे टोलक लोक दाँत कड़र लागल जे नवे बियेल महींस मरि गेल।

६० *दाँत पर दाँत बैसैब*—(सहन के लेब) हम भरि दिन हिनका लोकनिक गारि सँ तर भेल रहैत छी, मुदा जँ दाँत पर दाँत बैसौने छी तैँ निमहल जा रहल अछि।

६१ *दाँते आङ्गुर काटब*—(आश्चर्यित हैब) मैथिली भाषाक उन्नति देखि एकर विरोधी लोकनि दाँते आङ्गुर काटि रहल छथि।

१० जीह

६२ *जीह पनियैब*—(पैबाक इच्छा रहब) छोट नेना के मधुर देखिते जीह पनिआय लगैत छैक।

६३ *जीह नमरैब*—(क्षुद्रता देखैब) कुकुर जकाँ सभ ठाम जीह नमरौने रहैत छथि।

६४ *जीह मे लगैब*—(गुदानब) ई छौंड़ा तँ ककरो जीह मे लगबिते ने छैक, भरि दिन सबसँ झगड़े करैत रहैत छैक।

६५ *जीह नहिं टूटब*—(वाणी अस्पष्ट हैब) छोट नेनाक जी टूटल नहिं रहला सँ बोल लगैत छैक।

६६ *जी जी करब*—(हँ मे हँ मिलैब) हमरा तोरा लोकनि जकाँ अनुचितो गप्प मे जी जी करब नहिं नीक लगैत अछि।

६७ *जी-जान लगैब*—(पूर्ण शक्ति लगा देब) कोनो कठिन काज बिना जी-जान लगौने नहिं होइत छैक।

११ मुँह

६८ मुँह चलब (खाइत रहब) भरि दिन एहि छौंड़ाक मुँह चलिते रहैत छैक।

६९ मुँह फुलैब—(रुष्ट हैब) आइ मास दिन सँ देखैत छियन्हि जे ओ हमरा सँ मुँह फुलौने छथि।

७० मुँह छोड़ब—(धाख छोड़ि कऽ माङब) हम ककरो आगू एखन धरि अपन मुँह नहिं छोड़लहुँ अछि, आब आगू जे करऽ पड़ै।

७१ मुँह लगैब-(अपना सँ छोटक संग समकक्षक व्यवहार करब) छोटका लोक सँ जौं मुँह लगैब तँ गोटेक दिन उभट कथा कहि देत सब पैघत्व घुसड़ि जैत।

७२ मुँह धैने रहब—(खुशामद मे रहब) अहाँक बेटा थिकाह मुँह धैने रहबन्हि, हमरा सँ जे ई चाहता से नहिं भऽ सकैत छन्हि।

७३ मुँह चोरैब—(घखाइत रहब) सोझे एम० ए० केर सर्टीफिकेट नेने की हैतन्हि दस टा लोक मे जहाँ बाजक लेल कहबन्हि की मुँह चोरबऽ लगताह।

१२ गाल

७४ गाल मारब—(बतचोथौअलि करब) रे दशभाल गाल की मारह। काल विवश नहिं तोहरा ज्ञान॥

७५ गाल पचकब—(शरीर दुर्बल हैब) एखन तँ बाप जीविते-

छथि ताहि पर तँ एहेन लगैत छी आ जखन ओ मरि जैताह तखन ने गाल पचकत।

७६ *गाल नहि लाग देब*—(सत्यो कथाकेँ असत्य प्रमाणित करबाक यत्न करब) कालिह हम अपना आँखिए सँ देखलियैक जे बिना पानिए लग्घी करैत छल आ आइ कहलियैक तँ किन्नहुँ गाले ने लागऽ दैत छल।

७७ *गाल बजैब*—(उनटे बढ़ि चढ़ि कऽ बाजब) हमरा आङन सँ बेसाह लऽ जाइत छथि तकर होसे ने आ गाल बजबैत छथि।

१३ मूड़ी

७८ *मूड़ी उठैब*—(गौरवान्वित हैब) सौंसे गाम मे मूड़ी उठाकऽ चलनिहार व्यक्ति मे एखन कम्मे गोटे छथि।

७९ *मूड़ी घीचब* (कोनो काज आरम्भ कऽ पाछाँ हटि जैब) सौंसे गामक लोक मे झगड़ा लगा कऽ मोकदमा करा देलथिन आ अपने मूड़ी घीचि लेलन्हि।

८० *मूड़ पर मूड़ बजरब*—(एकके काजक लेल कतेको गोटा केँ प्रस्तुत हैब) जहाँ कतहु नौकरीक लेल स्थान खाली होउक की मूड़ पर मूड़ बजरऽ लगैत छैक।

१४ घेंट

८१ *घेंट काटब*—(बइमानी करब) सौंसे गामक छोटका लोकक घेंट काटि एना सम्पत्ति एकट्ठा कैने धनीक नहिं भऽ सकैत छी।

८२ घेंट मे घेंट जोड़ब—(सुख दुःख मे संग देब) एक परिवार मे रहऽ बला कें घेंट मे घेंट जोड़ि कऽ चलब आवश्यक होइत छैक।

८३ घेंट जोड़ब—(एकक हानि क दोसरक उपकार करब) हम अपना बेटाक घेंट काटि कऽ अहाँक घेंट जोड़ब से नहिं हैत।

८४ घेंट कटैब—(ठका जैब) हम पहिने कहि देने छलियैन जे कलकत्ता जा कऽ कथी लै अपन घेंट कटैब।

१५ कंठ

८५ कंठ पर चढ़ब—(कोनो वस्तुक घनघोर तगादा करब) कालिह दू टा रुपैया लेलियैन आइ कंठ पर सवार छथि।

८६. कंठ फुटब—(बजक्कड़ हैब) जाबत हमर रुपैया धारने छलाह तावत तँ बाजि होइते ने छलन्हि मुदा आब कंठ फुटलैन्हि अछि।

८७ कंठ घेड़ब—(मरणासन्न हैब) आब ई बूढ़ी नहि जीवि सकैत छथि, हिनकर कंठ घेड़ि लेलकन्हि।

८८ कंठ सुखैब— (भय हैब) १९६२ क हल्ला सुनि कऽ बूढ़ सँ लऽ कऽ जुआन धरिक कंठ सुखाइत छलैक।

१६ मोंछ

८९ मोंछ पर ताव देब—(मनसूबा करब) गरीब बाबू मोने मोने मोंछ पर ताव दैत छलाह जे बेटाक वियाह मे रुपैयाक मोटरी बान्हि लेब।

९० *मोंछ मे घिउ लगैब*—(निश्चिन्त भऽ कऽ रहब) जाउ मोछ मे घिउ लगा कै घर बैसू अइ बेर अहाँक बेटाक वियाह भेले अछि।

९१ *मोंछ मुड़ैब*—(सब किछु करबाक हेतु तैयार रहब) भरि दिन एकरा लोकनिक भरन-पोषन करक लेल मोछ मुड़ौने रहैत छी आ एकरा सब लेखे धन सन।

९२ *मोछ उखाड़ब*—(शपथ लेब) जौं एहि बेर हिनका हम नहि हरौल तँ एक-एक टा मोछ उखाड़ि कै फेकि देब।

१७ कान्ह

९३ *कान्ह भिड़ैब*—(सहयोग देब) अहाँ लोकनि जौं कान्ह भिड़ौने रहबैक तँ सब टा काज भऽ कऽ रहतैक।

९४ *कान्ह खसैब*—(उद्यम नहिं करब) एना जौं सब भाञि कान्ह खसौने रहबह तँ हम कतेक दिन धरि एसकरे चला सकैत छिअह ?

९५ *कान्ह लागब*—(गाड़ीक बड़दक रौंग हैब, आ जोड़ मिलब) ई दूनू बच्छा के कान्ह लागि गेलैक अछि।

९६ *कान्ह पटकब*—(बिच्चे मे छोड़ि देब) एहि बड़दक ई पुरान आदति छैक दू-चारि कोस चलत की कान्ह पटकि देत।

९७ *कान्ह उठैब*—(भार उठैब) आब ई चारू भाञि नीक जकाँ कान्ह उठा लेलक।

१८ छाती

९८ *छाती मे मुक्का मारब*—(हारि कै सन्तोष करब) हम तं छाती मे मुक्का मारि कऽ रहबे करब, मुदा बइमनमे केँ बइमानीक धन पचतनि नहि।

९९ *छाती फाटब*—(धैर्य नहिं रहब) हमर उन्नति देखिक अहिना द्रोही सबहक छाती फटैत रहतन्हि।

१०० *छाती पीटब*—(हाहाकार करब) निरपराधे तत्त मारि सोमना आङन वाली के मारलकैक अछि जे छाती पिटैत पच्छिम मुँहे पड़ायल चल गेलैक।

१०१ *छाती तोड़ब*—(विशेष श्रम) कमबैत-कमबैत एकरा लोकनि-हमर छाती तोड़ि देलक।

१०२ *छाती फूलब*—(प्रसन्नता हैब) अहाँ लोकनिक उन्नति देखि कै हमर छाती फुलि उठैत अछि।

१९ कोंढ़

१०३ *कोंढ़ उनटब*—(अनचोक मे कोनो सूचना भेटब) तेनाने कौआ बाजि उठैत छैक जे हमर कोंढ़ उनटि जाइत अछि।

१०४ *कोंढ़ फाटब*—(वियोगे दुःख हैब) रामक वियोग मे सीताक कोंढ़ फटैत हैतन्हि।

१०५ *कोंढ़ दुखैब*—(अनका दुख सँ दुखी हैब) गाड़ी घीचैत छलैक बड़द आ कोंढ़ दुखाइत छल हमर।

१०६ *कोढ़ खखोड़ब*—(अभाव मे ककरो सँ याचना करब) हौ बूढ़ि हमर कोंढ़ खखोड़ने की हैतह हमरा लग मे अछि जे हम देवह ?

२० पेट

१०७ *पेट पोसब*— (गुजर करब) कमैताह की कोनहुना अपन पेट पोसैत छथि, घर पर की देताह ?

१०८ *पेट चलब*—(एक प्रकारक बिमारी हैब) आइ भरि दिन हमर पेट चलैत अछि, हम नहिं खैब।

१०६ *पेट काटब*—(भोजन कम देब) जे भनसिया पेट कटैत छैक तकरा नरको मे ठाँव नहिं होइत छैक।

११० *पेट फूलब*—(बात नहिं पचब) हिनका कोनो बात कहबन्हि, जावत ई बजताह नहिं तावत पेट फूलऽ लगैत छैन्हि।

१११ *पेटक पानि डोलब*—(भय हैब) दरोगा कें देखिते सिपाही क पेटक पानि डोलऽ लगैत छैक।

११२ *पेट मे रहब*—(ककरो मोन मे रहब) जौं हमरा पेट मे हिनका लोकनि रहितथि तँ हम हिनका सबकें बना देने रहितियैन्ह

११३ *पेट कुड़िऐब*—(स्वार्थ सिद्ध करब) बइमान आदमी केवल अपने पेट कुड़िऐबा पर रहैत अछि।

११४ *पेट हँसोथब*—(पचैबाक यत्न करब) की हौ पेट बड़ हँसोथैत छह, फेरो कोनो ठाम नोत छह की।

११५ *पेट मे बिलाड़ि कूदब*—(भूख लागब) आइ भरि दिन पेट मे बिलाड़ि कूदैत अछि, कथीलै एक्को बेर ई सब आग्रह करत

२१ पीठ

११६ *पीठ पोछब*—(सहारा देब) परिवार मे एक्को टा समाङ एहन नहि अछि जे पीठो पोछत।

११७ *पीठ देखैब*—(लड़ाइक मैदान सँ भागि जैब) कायर पुरुष लड़ाइक मैदान सँ पीठ देखा कै भागि जाइत अछि।

११८ *पीठ झाड़ब*—(निर्लज्जता पूर्वक सहि लेब) ओ निर्लज्ज अछि, चारि लात मारि दिऔक पेट भरि दिऔक पीठ झाड़ि लेत।

११९ *पीठ ठोकब*—(प्रोत्साहन देब) हमरा जौँ क्यौ पीठ ठोक बला होइतै तँ हम देखा दितियैक जे कोना लोक उन्नति करैत अछि।

१२० *पीठ ओड़ब*—(मारि खैबाक हेतु तैयार हैब) जे गदहा होइत अछि ओ एहिना सबहक आगू पीठ ओड़ि दैत अछि।

१२१ *पीठ पर ठाढ़ हैब*—(काज लेबक हेतु तैयार रहब) जन बड़िजनाक पीठ पर बिनु ठाढ़ भेने काज नहिं होइत छैक।

२२ डांड़

१२२ *डाँड़ मोड़ब*—(कनेक विश्राम करब) भरि दिन काजक पाछू छौड़ा बेहाल भेल रहैत अछि, कखनो डाँड़ मोड़बाक पलखति नहिं भेटैत छैक।

१२३ डाँड़ *टूटब*—(विशेष परिश्रम करब) भरि दिन काज करैत हमर डाँड़ टूटि गेल आ दू बेर जांति देबक लेल क्यो तैयार नहिं।

१२४ डाँड़ *तोड़ब*—(अपंगु बना देब) आब जौं बुढ़वे एमहर सँ ओमहर किछु करताह तँ डाँड़ तोड़ि कै घर बैसा देबनि

१२५ डाँड़ *लागब*—(घाटा लागब) पटुआ बेचबा मे बड़ डाँड़ लागि गेल।

२३ बाँहि

१२६ बाँहि *पुजैब*--(मुँह पुरुखी करब) ई जे क्यौ चाहताह जे हमरा गाम मे आबि कै बाँहि पुजावी से नहिं चलतन्हि।

१२७ बाँहि *पूरब*--(संग देब) आब ठीठरभाक बेटा सेहो बाँहि पुरबा जोगरक भ गेलैनि।

१२८ बाँहि *रोपब*--(बलधमकी देखैब) हमरा संग जे बाँहि रोपल करताह तनिका बिना हम पछाड़ने नहिं छोड़बनि।

१२९ बाँहि *पट्टा खेलैब*--(दाव पेंच देखैब) ई छौंड़ा बौआइत रहैत छल, हम एकरा बसौल आ से हमरे संग बाँहि पट्टा खेलाइत अछि।

२४ हाथ

१३० *हाथ उठैब*--(ईश्वर सँ माङ करब) हम सब दिन भगवान केँ हाथ उठबैत छियैन्हि जे हे भगवान आब एहि दुःख सँ उद्धार करू।

(ख) (मारबाक हेतु तैयार हैब) जौँ हमरा धीया-पूता पर हाथ उठौताह तँ हम जीबऽ देबे ने करबैन।

१३१ *हाथ लगैब*—(बिना पुछने किछु लऽ लेब) मधुकान्त भारी छुद्र लोक अछि एमहर-ओमहर ताकत, जे किछु देखत हाथ लगा लेत।

१३२ *हाथ मलब*—(पश्चात्ताप करब) हौ बाबू ! पढ़बाक समय मे जौँ पढ़बह नहि तँ पाछू हाथ मलने किछु नहिं हैतह।

१३३ *हाथ कुड़िऐब*—(नगदी आमदक पूर्वाभास हैब) डाकपीन जखने नारायण बाबू केँ कहलकन्हि जे कलकत्ता सँ मनिआर्डर ऐल अछि की झटदऽ बाजि उठलाह आइ भिनसरे सँ हमर हाथ कुड़ियाइत छल।

१३४ *हाथ गरमैब*—(रुपया पैसा एकट्ठा करब) जमीन बेचि-बेचि कै महन्थ जी एखन हाथ धरि खूब गरमौने छथि।

१३४ *हाथ पकड़ब*—(ककरो संगपुरक प्रतिज्ञा करब) जखन हम अहाँक हाथ पकड़ि लेने छी तखन तँ ओकर पालन अवश्य करब।

१३५ *हाथ छोड़ब*—(मारि बैसब) श्रीधर केँ अपना मोन मे विचार नहिं, जे अनका लोक वेद पर चट दऽ हाथ छोड़ि देलथिन।

२५ टांङ

१३५ टाँङ अड़ँब--(बाधा देब) जौँ हमरा काज मे टाङ अड़ौताह तँ हम एको मिनट एतै नहिं रहऽ देबन्हि।

१३६ टाँङ मोड़ब—(विश्राम करब) भरि दिन खटैत खटैत मरि जैब एक रत्ती टाङ मोड़बाक अवकाश नहिं हैत।

२६ पैर

१३७ पैर मे तेल लगैव--(खुशामद करब) हम नहिं ककरो पैर मे तेल लगेबन्हि अहाँ के गर्ज अछि लगबिऔन्हि।

१३८ पैर पाछु करब--(पाछाँ हटब) वीर पुरुष रणभूमि मे जा कऽ पैर पाछु करब अपन अपमान बुझैत अछि।

१३९ पैर पुजैब--(सम्मानित हैब) बीरभद्र जयपुर मे जाकऽ पैर पुजा रहल छथि।

१४० पैर पकड़ब--(नेहोरा करब) हम अपना गल्तीक लेल सौसें गामक पैर पकड़ैत छियैन्हि क्षमा कऽ देथु।

१४१ पैर रोपब—(स्थिर हैब) पहिने कोनो ठाम पैर रोपू तखन सब काज भऽ जैत।

१४२ पैर धरती पर नहिं देब—(घमंडी हैब) जहिया सँ शम्भूक वियाह औवरसियर साहेबक बेटीक सँ भेलैक अछि तहियासँ पैर धरती पर नहिं दैत अछि।



कहबी वा (लोकोक्ति)

लोकोक्ति मुहावरा सँ भिन्न वस्तु थीक, ठेंठ मैथिली भाषा मे एकरा कहबी कहल जाइत छैक, ई आइ काल्हुक साहित्य नहिं थीक। प्रत्युत बड़ प्राचीन काल सँ आबिरहल अछि। एकर प्रयोग मूर्ख सँ मूर्ख आ विद्वान सँ विद्वान लोकनि करैत ऐल छथि।

बहुतो कहबी एहनो अछि जे बड़ बेशी अश्लील अछि, मुदा ओकर प्रयोग सत्साहित्य मध्य नहिं कैल जाइत अछि, प्रत्युत साधारणँ वार्तालाप मे होइत अछि। प्रस्तुत संकलन मे हम मात्र उपयोगी कहबीए टाक संकलन कैलहुँ अछि।



१ *अनहा गाम मे कनहा राजा :—*

बुधनाक बेटा चारि अच्छर पढ़ि कए सौसे गोअर टोलीक अनहा गाम मे कनहा राजा बनल अछि ।

२ *असर्फीक लूटि कोइला पर छाप :—*

एकरा लोकनि भरि दिन अनका जामुनक गाछ तर बैसल रहत आ अपना गाछी मे जैत से नहि, असर्फीक लूटि आ कोइला पर छाप ।

३ *अघैल बक कें पोठी तीत :—*

आइ तँ हिनका आङन अपने नौ छौ तरकारी भऽ रहल छन्हि ई सुखैल रोटी कोना खैताह, बुझल नहिं अछि जे अघैल बक कें पोठी तीत ।

४ *अकुलिन बिआहने कुलक उपहास :—*

भरि दिन दूनू देयादिनी कें झगड़ा होइते रहैत छैक लोक जे नीक कूल खूटक लेल मरैत अछि से एहि दुआरे नें। जे अकुलिनि बिआहने कुलक उपहास ।

५ *अनेर गाय केर राम रखवार :—*

सोनमा के माय-बाप कनिञ्चो टा मे मरि गेलैक आ छौँड़ा कें जीवक छलैक तँ आइ नेने भुटके आङन भरल छैक अनेर गाय केर राम रखवार भेल थिन्ह ।

६ *अपना लय लल्ल तऽ गोइठा बीछऽ चल :—*

अपना घोर भेटव दुर्लभ छन्हि आ हिनका आग्रह करैत छथिन्ह जे चलू चूड़ा दही खुआदेब, अपना लय लल्ल तँ गोइठा बीछऽ चल ।

७ *आइ माइ के ठोप नहिं बिलाड़ि कें काजर :—*

महन्थक उपनयन मे सौंसे चमर टोलीक मौगी पुरुष कचरि क भोज खेलक आ पाहुन कतेको भूखले रहि गेलाह एहने ठाम कहबी छैक जे आइ माइ कें ठोप नहिं बिलाड़ि कें काजर।

८ *अपने करनी पार उतरनी :—*

धीया-पुता कें एखन पढ़ऽ कहैत छियैन्हि तँ स्कूल काटऽ छुटैत छन्हि, हमहूँ आब अकच्छ भऽ कऽ छोड़ि दैत छियैन्हि अपने करनी पार उतरनी।

९ *आगू नाथ ने पाछू पगहा :—*

नकछेदी बाबू जौँ सबटा सम्पत्ति दुर्गास्थानक नामे लिखिए देलथिन्ह तँ कोन आश्चर्य, भोगबे के करितन्हि हुनका तँ आगू नाथ ने पाछू पगहा।

१० *आन्हर कुकुर बसाते भूकए :—*

अहाँ कें तँ किछु क्यौ कहि दैत अछि कि अनेरे तामसे सब पर भेर भऽ जाइत छियैक कहबी छैक जे आन्हर कुकुर बसाते भुकए।

११ *आलसीक लेखे गंगा बड़ी दूर :—*

हमरा लोकनि एखनहुँ दस-बारह कोस पैरे चल जाइत छी, आ एकरा सब कें दू कोस पैरे जाय कहबै क तँ दू सै बहाना देखौत आलसीक लेखे गंगा बड़ी दूर तकरे परि भऽ जाइत छैक।

१२ *आधा तीतिर आधा बटेर :—*

मोहन ने अंग्रेजीए पढ़लन्हि आ ने संस्कृते खाली धोती पर सँ बुश्शर्ट पहिरिकऽ आधा तीतिर आधा बटेर भऽ जाइत छथि ।

१३ *आँखिक देखल दूर करी, भला मानुषक कहल करी:—*

जौं ओ बाड़ी मे घास नहिं छिलैत छलह सागे तोड़ैत छल तँ बाप जे कहैत छथुन्ह से मानि लैह आँखिक देखल दूर करी आ भला मानुषक कहल करी ।

१४ *आम खैबा सँ काज की गाछ गनवा सँ:—*

हम कतहु सं टका आनिकऽ देलहुँ ताहि सँ अहाँ कें कोन काज अछि? आम खैबा सँ काज अछि की गाछ गनबा सं ।

१५ *ई गूड़ खैने कान छेदौने:—*

बौआ! गाम पर जे खैबाक अछि से खा लीअऽ, बाट मे फेर भात खैबाक लेल नहिं भेटत ई गूड़ खैने कान छेदौने फेर गामे पर आबिकय ।

१६ *इसखीक मौगति माघ मास:—*

बाध जैबे काल हम कहने छलियन्हि जे एक टा छड़ी हाथ मे लऽलीअऽ ऐबा काल राति भय जैत बतहा कुकुर लोकके कटने फिरैत छैक, मुदा के बुझैत अछि इसखीक मौगति माघ मास बुझथुन्ह आब तकर फल ।

१७ *ई बूढ़ि बरही गाम कमैता जनिका बसिलाने रुखान:—*

एकटा श्लोकक अर्थ करय कहलियैन से भेबे ने कैलन्हि आ ई पण्डिताइ करताह–ई बूढ़ि बरही गाम कमैताह जनिका बसिला ने रुखान।

१८ *इषें नाङड़ि कटावी आ छौ मास बेथेमरीः—*

तोँ जे मालिकक बेटाक देखाउँस करबह से हमरा सँ नहिं पार लागत इषें नाङड़ि कटाबी आ छौ मास बेथे मरी धान बेचिक कोना साइकिल कीनि दीअऽ।

१९ *उपजल आङन पोआरहिं चिन्हल*

तखन सँ सुनैत-सुनैत मोन घोर भऽ गेल जेहेन रहन सहन छन्हि से बुझले अछि वैह मोटका धोती आ मोटका तौनी, आ ई खाइत छथि सभ दिन दूधे दही, बूड़ि रे! उपजल आङन पोआरहिं चिन्हल।

२० *उनटे चोर कोतवाल केँ डाँटयः—*

हमरा आङन मे यैह झगड़ो लगा देलक अछि आ फेर उलहनो यैह देबऽऐल अछि कहवी छैक जे उनटे चोर कोतवाल के डाँटय।

२१ *ऊँटक मुँह मे जीरक फोड़नः—*

औ हिनका एहि चारि टा सोहारी सँ की हैतन्हि ऊँटक मुँह मे जीरक फोड़न।

२२ *उचित कहैत घर झगड़ाः—*

आब ओ समय नहिं छैक जे ककरो नीक कथा कहियैक कारण उचित कहैत घर झगड़ा तखन कोन प्रयोजन अछि।

२३ *उखरि मे मुँह देब तँ मुसराक डरः—*

जखन सौँसे गाम नोति देल तखन खर्चक की चिन्ता-करब, उखरि मे मुँह देब तँ मुसराक डर।

२४ *उगह चान की लपकह पूआ।—*

गेना कका के आब कोन वस्तुक कमी छन्हि बेटा एम० ए० कऽ लेबे कैलकन्हि नोकरी जहाँ भेटलैक की तुरन्ते ने उगह चान की लपकह पूआ।

२५ *ऊँच्चा चढ़ि-चढ़ि देखा घर-घर एक्के लेखाः—*

आब जे छौटका कें दुसबहक से नहिं दुसि सकैत छहक ऊँच्चा चढ़ि-चढ़ि देखा घर-घर एक्के लेखा।

२६ *एक आनाक मुर्गी नौ आनाक मसालाः—*

हम एहेन ठाम नोत खैबा सँ बाज अबैत छी जे जाइत अबैत दू टाका खर्च भऽजैत एक साँझ खैब आ तइ लेल ई एक आनाक मुर्गी नौ आनाक मसाला।

२७ *एक बंगाली दोसर तोतराहः—*

एक तँ पढ़बा मे ई भुसकौल ताहि पर सँ बाप बियाहो करा देलथिन्ह, एक बंगाली दोसर तोतराह आब की पढ़तन्हि।

२८ *एक पंथ दू काजः—*

अइबेर विचार अछि बैद्यनाथक धाम अवश्य जैब आ घूरब तँ कलकत्ता सँ सेहो भेल ऐब एक पंथ दू काज भऽ जैत।

२९ *एक म्यान मे दू तरुआरिः—*

हम तँ पहिने सँ जनैत छलियैन जे ई दुनू भाञ्ज एक ठाम नहिं रहि सकैत छथि कारण एक म्यान मे दू तरुआरि कतहु रहै।

३० *ऐल पानि गेल पानि बाटे बिलैल पानिः—*

जहिना एहि बेर आम सँ रुपया ऐल तहिना दवाइयेमे खर्च-

भय गेल, बूझू जे ऐल पानि गेल पानि बाटे बिलैल पानि।

३१ *ओझा केँ गाय छूटल बाय भेल—*

हमरा ई घड़ी की सासुर मे भेटल बूझू जे ओझा केँ गाय छूटल बाय भेल।

३२ *ओझा बियाह कैल गाम सुख लेल—*

हम ई साइकिल की कीनल, भरि दिन मङनी सँ अकच्छ रहैत छी, कहबी छैक जे ओझा बियाह कैल गाम सुख लेल।

३३ *ओझा लेखेँ गाम बताह गामक लेखेँ ओझा बताहः—*

बेटा बुझैत छथिन्ह जे हम बड़ बुधियार छी, आ बाप बुझैत छथिन्ह जे हम बड़ बुधियार छी कहबी छैक जे ओझा लेखेँ गाम बताह गामक लेखेँ ओझा बताह तकरे परि छन्हि दूनू गोटा मे।

३४ *कनही गाय केँ भिन्ने बथान—*

परमेश्वर बाबू केँ अपना जे मोन होइत छन्हि सैह करैत छथि हुनका के कहतन्हि, कनही गाय केँ भिन्ने बथान।

३५ *करड़ीक थम्ह पर सितुआ चोख—*

झोटनाक बेटा कमजोर छलैक तैँ सब माइपूते जाकऽ मारि ऐलथिन्ह आ ओहीठाम चुल्हबाक बेटा केँ किछु कहथुन्ह ने तखन बुझिएन्हि मुदा एहिठाम तँ करड़ीक थम्ह पर सितुआ चोख तकर परि अछि।

३६ *कहियो नाव पर गाड़ी तँ कहियो गाड़ी पर नाव—*

एखन जतेक फुटानी बापक जीबैत करताह से कऽ लेथु-

अपनो धीया पूता छन्हिए, तखन बुझबा मे औतन्हि;
कहियो नाव पर गाड़ी तँ कहियो गाड़ी पर नाव ।

३७ *काज ने धंधा तीन रोटी बन्धा—*
भरि दिन लोकक अङने-अङने घुमैत रहत आ खैबा बेर मे सब सँ पहिने आबि कऽ खा लेत, काज ने धंधा आ तीन रोटी बन्धा ।

३८ *कमाथि बड़द आ हकमथि कूकुर—*
भरि दिन खटैत छी हम, आ देह दुखाइत रहैत छैक एकरा लोकनिक कहबी छैक जे कमाथि बड़द आ हकमथि कूकुर ।

३९ *कानक मोन भेल तँ आँखि मे गड़ल खुट्टी—*
ओना अपना बजार घुमबाक छह सेने कहह तँ फुसियें की तँ मोन खराब अछि दबाइ आनबगऽ कानक मोन भेल तँ आँखि मे गड़ल खुट्टी ।

४० *कूकुरक भागे सीक टूटल—*
ने ई नब स्कूल गाम मे फूजैत, आने हिनका नोकरी होइतन्हि, ई तँ कूकुरक भागे सीक टूटल ।

४१ *केस उपाड़ने मुर्दा हल्लुक—*
जौं हमर पाँच रुपैया नहिंये देताह तँ की हम ओहि सँ गरीब भऽ जैब कहबी छैक जे केस उपाड़ने मुर्दा हल्लुक ।

५२ *गोआरैक कहने गाइक घी गोआरैक कहने महिंसिक घी*
आइ नीक दिन छैक की नहिं से तँ पण्डिते जी सब कहि-

सकैत छथि कारण गोआरैक कहने गाइक घी आ गोआरैक कहने महिंसिक घी।

५४ *गूड़क मारि धोकड़े जानय*

हमरा बेटीक कन्यादान मे कतेक खर्च भेल सेतँ हमहीं जनैत छी हुनका तँ जीवन मे कोनो काज करऽ पड़बे ने कैलन्हि अछि तखन ओ की जानऽ गेलथिन्ह, ओ तँ गूड़क मारि धोकड़े जानय।

५५ *गोर माउगि गौरबे आन्हरि*

अरुण पाँचमा वर्ग मे फस्ट कऽ लेलक तहिया सँ कथी लए एक्कोबेर पोथी उनटौत, गोर माउगि गौरबे आन्हरि भेल अछि।

५६ *गोनू झाक बिलाड़ि*

एखन जतेक कर्जा लेताह से लेथु ने आ जखन जमीन लिलाम होयतन्हि तखन ने बुझथिन्ह, जौँ गोनूझाक बिलाड़िक परि नहि भेलन्हि तँ फेर की।

४२ *कोढ़ि कटनिञा के मूङरसन आँटी*

भरि साल खेतीक बेर मे गामे-गामे बौएल फिरैत रहैत छथि आ अगहन मे हरबाही चाहिऐन्हि, कहवी छैक जे कोढ़ि कटनिञा के मूङरसन आँटी।

४३ *कोइरिन कें घेघ आ गहिकी कें अनसोहाँत*-- ३८ नं २१

धीया-पूता सोहरल छन्हि तँ अपन सम्हारैत छथि, ताहि

सँ आहाँ कें की ? कहैत छैक जे कोइरिन कें घेघ आ गहिकी कें अनसोहाँत।

४४ खाइ साग-पात आ सूती नवाबक साथ–

चारि अक्षर शुद्ध लिखताह से लुरिए ने छन्हि आ गप्प करताह भषे विज्ञानक खाइ साग-पात आ सूती नवाबक साथ।

४५ खिसिऐल बिलाड़ि धुर-खुर नोचय—

बाघ मे झगड़ा भेलन्हि अछि जन सँ आ मारऽ ऐलाह अछि हमरा, ओहिठाम तँ किछु चलबे ने कैलहि तखन खिसिऐल बिलाड़ि धुरखुड़ नोचय।

४६ खुट्टाक बले परड़ू चुकरय—

तों तँ महन्थक बल पर अनकर खेत चरौने फिरैत छहक से खुट्टा बले परड़ू चुकरैत अछि।

४७ खेत खाय गदहा मारल जाय जोलहा -

चोरी कैलक मोहनपुर बला आ पकड़ल गेल बरही बला ई तँ ओहिना भेल जेना खेत खाय गदहा आ मारल जाय जोलहा।

४८ खेबो दी भसिऐलो जाइ-

हम हिनका लोकनि के अपना डेरा पर राखि कऽ खर्चा दऽ कऽ पढ़ाइयो रहल छियैन्ह आ तखन माय-बाप कहैत छथिन्ह जे अपने बेगतें रखने छथिन्ह। हमरालै तँ खेबो दी आ भसिऐलो जाइ।

४९ *गदहा गेलाह स्वर्ग तँ छान लगले गेलन्हि–*

हम एहिठाम ऐलहुँ जे शान्ति पूर्वक रहब, मुदा एहूठाम ओ झंझट लगले रहल, गदहा गेलाह स्वर्ग तँ छान लगले गेलन्हि।

५० *गदहा केँ ने आन किसान, धोबिया केँ ने आन बाहन*

ताराबाबू कतेको बेर एहि नोकर केँ हटौलन्हि अछि आ रखलन्हि अछि तकर कोनो ठेकान नहिं मुदा दूनू गोटा मे की छन्हि से नहिं जानि बूझि पड़ैत अछि जे गदहा केँ ने आन किसान धोबिया के ने आन बाहन।

५१ *गाय बिकैल चरवाहिए*

जौं ई जनितहुँ जे ई साइकिल तेसरा दिन पर खराप हैत तँ किन्नहुँ ने लितहुँ आधा मासक दरमाहा एकरे पाछू खर्च भऽ जाइत अछि बूझू तँ गाय बिकैल चरबाहिए।

५२ *गुरु गूड़ चेला चीनी*

एक तं धर्मनाथ अपने एक नम्बरक बइमान आ ओकर बेटा तँ आरो पैघ बइमान बहरैलैक अछि गुरु गूड़ आ चेला चीन्नी।

५७ *घरक भेदिया लंका डाह*

जौं आइ एकरा दूनू भाय मे मतभेद नहिं भेल रहितैक तँ तेहल्लाक जे गोटी लाल भऽ रहल छन्हि से नहिं ने-

होइतन्हि मुदा एहि ठाम तँ घरक भेदिया लंक डाह,
तकर परि भेल अछि ।

५८ *घर दही तँ बाहरो दही—*

अपन साइकिल जहिया सँ बेचि लेलहुँ अछि तहिया सँ जौं ककरो ओहिठाम मङनी करऽ गेलियैक अछि तँ पच्चीस टा बहाना देखा देलक अछि कहबी छैक जे घर दही तँ बाहरो दही ।

५९ *चलऽ ने आबय तँ अङना टेढ़—*

एहि कविताक अर्थ तँ लगलनि नहि तँ कहैत छथि जे अशुद्ध छपल छैक—कहैत छैक जे चलऽ ने आबय तँ अङना टेढ़ ।

६० *चालनि दुसलनि सूप केँ जनिका सहस्र गोट छिद्र—*

रामनारायण अनका कहैत छथिन्ह जे बड़ बइमान अछि आ अपन काज नहिं देखैत छथि जे केहेन करैत रहैत छथि कहबी छैक जे चालनि दूसलन्हि सूप केँ जनिका सहस्र गोट छिद्र ।

६१ *चट मङनी पट बियाह*

सौसेँ गोआँ के चकबिदोड़ लगले रहि गेलन्हि जे बेचन कोन बाटे रुपैया अनलक आ कोठा मे हाथ लगा समाप्त कऽ लेलक कहबी छैक जे चट मङनी पट बियाह ।

६२ *चिड़ै के जान जाय चिलका के खेलौना*

हमरा अपने पेटक दर्द सँ मोन घोर लगैत अछि आ-

हिनका लोकनि कें हँस्सी लागि रहल छन्हि, कहवी छैक जे चिड़ैक जान जाय चिलकाक खेलौना।

६३ *चीन्है ने जानय मौसी-मौसी करय*

एहन लोक तँ देखबे ने कैलहुँ अछि हम हिनका चिन्हिते ने छियैन आ तखन सँ हमरा तंग कैने छथि जे हमरा दू सै टका पैंच दीअऽ कहबी छैक जे चीन्है ने जानय मौसी मौसी करय।

६४ *चोर-चोर मसिऔत भाय*

तों जे हेमधरक पच्छ लैत छहक से ओहिना नहि, जेहने ओ तेहने तों, दूनू चोर-चोर मसियौत भाय छह।

६५ *चोर कें गरहत्था उसास*

हिनका तँ एहि खूनी केश मे ५०० सौ रुपैया जुड़मने भेलन्हि ई तँ फाँसी पर लटका देल जइतथि चोर के गरहत्था उसास सैह भेलन्हि।

६६ *चोर-मोट बन्हनहि पाबी*

मोहन गाम सँ बिदा हैत्राकाल मोटा बान्हि रहल छलाह ताहि पर माय कहि उठलथिन्ह—हौ मोहन! कने नीक जकाँ सक्कत मँ बान्हि लैह नेतं बाटे मे फुजि जैतह चोर मोट बन्हनहि पाबी।

६७ *छोट खिखिरक मोट नाङड़ि*

हिनका नेना नहिं बुझिऔन खैला-पीला पर ई २५, ३० टा मालदह देखिलैत छथिन्ह छोट खिखिरक मोट नाङड़ि छन्हि।

६८ *जकरे माय मरैक तकरे पात भात नहिं*

औजी ! एकरे उपनयन थिकैक आ सब गोटे देखि रहल छियैक जे एक रत्ती दहीक लेल तखन सँ ई बैसल अछि आ क्यौ गोटे नहिं दऽ रहल छियैक कहबी छैक जे जकरे माय मरैक तकरे पात भात नहिं ।

६९ *जबक संग घून पिसाय*

खून कैलन्हि महन्थ जी आ हुनका संग बान्हल गेल सौंसे परोपट्टाक लोक, कहबी छैक जे जबक संग घून पिसाय ।

७० *जकरे बियाह तकरे गीत*

चुमनाक ओहिठामक भोज देखि मोहन कें हंस्सी लगलन्हि, ताहि पर फेकन कहलथिन्ह बुझल नहिं छह जे जकरे बियाह तकरे गीत ।

७१ *जा धरि साँस ता धरि आश*

रवीन्द्रक काकी मरबालय छलथिन्हे तैयो ओ दबाइ करैत रहलन्हि, किएक तँ जा धरि साँस ता धरि आश ।

७२ *जानी ढोढ़क मन्त्र ने आ दी दराधक माथा हाथ*

राजनीति मे बुझैत छथिन्ह किछु ने आ गप्प करताह अन्तराष्ट्रीय राजनीति पर कहबी छैक जे जानी ढ़ोढ़क मन्त्र ने आ दी दराधक माथा हाथ ।

७३ *जे गरजय से बरिसय नहिं*

निरसन ततेक फनकैत रहत पहिने सँ जे लोक कें होइत छैक जे पहाड़ उनटा देत मुदा बेर पड़ला पर एकरा

सँ होइत छैक किच्छुने, कहबी छैक जे--जे गरजय से बरिसय नहिं।

७४ *जोड़ जरि गेल आ ऐंठन पड़ले अछि--*

जमिन्दार सबहक जमिन्दारी चल गेलन्हि, मुदा एखन धरि हुनका बेटा लोकनिक टेढ़ी छन्हिए, जौड़ जरि गेल आ ऐंठन पड़ले अछि।

७५ *जे हैत आन सँ से हैत भगवान सँ—*

एखन धरि लूटन हमर कोनो काज नहि चलौलन्हि अछि आ ने हुनका सँ पारे लगतन्हि, हमरा लय तँ, जे हैत आन सँ से हैत भगवान सँ।

७६ *कतऽ राजा भोज आ कतऽ भोजबा तेली—*

मोहन विड़ला आ मौजे साहुक तुलना एक्के रंगक व्यापारी मे करैत छलाह ताहि पर रमेश कहि उठलन्हि तोहूँ मोहन! बुद्धि सं काज नहिं लैत छहक हौ! कतऽ राजा भोज आ कत्तऽ भोजबा तेली?

७७ *भूठक खेती धर्मक दोहाइ–*

जिनगी भरि खाली बइमानिये सँ सम्पति एकट्टा कैलन्हि आ मरऽ काल केहेन साधु भऽ गेलाह अछि, भूठक खेती आ धर्मक दोहाइ।

७८ *टिटही टेकल पर्बत–*

जौँ तोरा ई सामर्थ्य नहि छलह जे स्कूल चला हैत, तखन टिटही टेकल पर्वत तकर परि करबे कियैक कैलह।

७६ टुटलो हथिसार तँ नौ घरक साङ्ह—

इन्द्रनाथ बाबूक सम्पत्ति कतबो घटि गेलन्हि अछि तँ आन लोक सँ नीके हालत छन्हि, टुटलो हथिसार तँ नौ घरक साङ्ह।

८० ठेस लगने बुद्धि बढ़ैत छैक—

आबहु मोन सँ पढ़ह जे अगिला बेर कोनहुना पास कऽ जाह लोक केँ ठेस लगने बुद्धि बढ़ैत छैक आ तों फेलो कयला पर ओहने छह।

८१ तीन मे की तेरह मे—

हम जे हुनका पर अपन दवाब देबन्हि से आे हमरा तीन मे की तेरह मे ?

८२ तीन तिरहुतिया तेरह पाक—

एहि आङन मे ककरो मजाल नहिं थिकैक जे सब केँ सन्तुष्ट कऽ कऽ राखत; सबहक भिन्न-भिन्न विचार छैक तीन तिरहुतिया तेरह पाकक परि छैक।

८३ थोड़ अच्छत देवता अधिक—

हमरा हिनका आङनक भोज मे परसल नहिं पार लागि सकैत अछि, कारण थोड़ अच्छत देवता अधिक।

८४ दसक लाठी एकक बोझ—

जौं सौं से गामक लोक मिलि कऽ चाही जे महादेवक मन्दिर तैयार भऽ जाय तँ कोनो भारी बात नहिं थीक कारण दसक लाठी एकक बोझ।

८५ दूधगरि गाइक लथाड़ो सही—

कोन हमर ओ भरण-पोषण करैत छथि जे हम हुनकर गंजन सुनैत रहब बूझी जे मास मे दस पाँच टका दैत छथि तँ की करब दूधगरि गाइक लथाड़ो सही।

८६ दूधक दूध आ पानिक पानि—

युगेश्वर बाबू पंचैती मे दूधक दूध आ पानिक पानि कऽ कऽ राखि दैत छथिन्ह।

८७ दूनू हाथ लड्डू—

ओ हमरा ओहिठाम कुटमैती करथि वा हुनका ओहिठाम करथुन, हमरा दूनू हाथ लड्डू, कारण ओहो तँ हमरे थिकाह।

८८ दाबक दुदिसिया—

देखह सुरेश! तों हमरा लग आबि कऽ हमरासन गप्प करैत छह आ लूटन लग जाकऽ लूटन सनक गप्प करैत छहक, तैं कहि दैत छिअह दाबक दुदिसिया जुनि बनह नेतँ कतहु केर नहिं रहबह।

८९ धी मारै पुतहु लिअय त्रास—

हम तँ देखिए कऽ गुम्म भऽ गेलहुँ, जे अपना बेटा कें एना मारि सकैत अछि से अनका की करत कहबी छैक जे धी मारै पुतहु लिअय त्रास।

९० धोबिआक कुकुर ने घरक ने घाटक—

रामचन्द्र ओतेक नीक नोकरी छोड़ि कऽ ऐलाह जे व्यापार करब, ओही मे बेसी पैसा हैत, मुदा ओहू मे-

सबटा घाटे लगलन्हि, आब धोबिआक कुकुर ने घरक ने घाटक तकर परि भेल छन्हि ।

९१ *नौ केर लकड़ी नब्बे खर्च—*

[देखू एक आनाक मुर्गी नौ आनाक मसाला]

९२ *नाङ्ट नहैती गारत की—*

जौँ सरकार सबटा सम्पत्ति लेबे करतैक तँ ताहि सँ हमरा लोकनि केँ की, नाङ्ट नहैती गारत की ?

९३ *ने राधा केँ नौ मोन घी हेतन्हि ने राधा नचती—*

जौं ई बात बुझल अछि जे बेटा शहर मे रहि कऽ सिनेमा देखबा मे बड्ड खर्च करैत छथि तँ रुपैया पठौनाइ बन्द कऽ दिऔन्हि तखने ने बुझथिन्ह, ने राधा केँ नौ मोन घी हैतन्हि आ ने राधा नचतीह ।

९४ *ने रहत बाँस ने बाजत बसुली—*

केदार आ फौदार साइकिल पर चढ़क लेल झगड़ा करैत छलाह से देखि बाप कहि उठलथिन्ह जे आब हम एकरा बेचिए लैत छी ने रहत बाँस ने बाजत बसुली ।

९५ *पराधीन सुख सपनहुँ नाही—*

नोकरी करऽ बाला चाहत जे गृहस्थ जकाँ आनन्द करी से ओ कोना कऽ सकैत अछि ओकरा तँ पराधीन सुख सपनहुँ नाहीं, तकर परि रहैत छैक ।

९६ *पानि मे माछ नौ-नौ कुटिया बखरा–*

आहाँ लोकनि जे आशा लगओने छी से एखन सरकारी रुपैया नहिं भेटत। कहबी छैक जे पानि मे माछ नौ-नौ कुटिया बखरा।

९७ *पानि पीबी छानि कऽ बात बाजी जानि कऽ*

ओतेक लोकक बीच मे जे तोँ सब बात बाजि देलहक अछि से एतबो ज्ञान नहिं छह जे पानि पीबी छानिकऽ बात बाजी जानिकऽ ?

९८ *फुकना लेखेँ टाका झिटुकी–*

हम अपना जिबैत जौँ हजारो बिघहा खेत अरजि देबैन तैयो ई ओहि सँ गुजर नहि कऽ सकैत छथि कारण फुकना लेखेँ टाका झिटुकी।

९९ *बान्ह सँ खत्ता ऊँच—*

महेश बाबूक सम्पत्ति लऽ कऽ सुरेश आइ क्यौ कहा रहल अछि आ महेश बाबू दिन-दिन बिलैल जा रहल छथि कहबी छैक जे बान्ह सँ खत्ता ऊँच।

१०० *बाभनक गाम मे राड़ पजियाड़*

तोँ जे चाहैत छह से नहिं भऽ सकैत छह, तोरा सँ बेसी काबिल लोक एहिठाम अछि बाभनक गाम मे राड़ पजियाड़ से नहिं हैतह।

१०१ *बाभन नाचय कोइर देखय*

हम तँ हिनका लोकनिक व्यवहार देखिकऽ गुम्म छी जे-

छोटका लोक अपना मे केहेन मिलान कैने अछि आ ई बाबू भैया अपने मे अपने लड़िक सबटा सम्पत्ति बुड़ौने जा रहलाह अछि, कहबी छैक जे बाभन नाचय कोइर देखय।

१०२ बापक नाम साग-पात बेटाक नाम परोड़

चुमना जिनगी भरि लोकक खबासी करैत-करैत मुइल आ तकर बेटा सोमना नवाबी देखा रहल अछि, बापक नाम साग-पात आ बेटाक नाम परोड़।

१०३ बाबाजीक बेल हाथे-हाथे गेल

सौंसे परोपट्टाक लोक तमाकू खैत आ राखत क्यौ नहिं हम जौं चारि पाइक लेबो करू तँ एक दिन सँ बेसी नहिं टिकैत अछि कारण बाबाजीक बेल हाथे-हाथे गेल।

१०४ बियाह सँ बिधि भारी

छठि पावनि मे खाउ एक साँझ मुदा ओरिओन मे ततेक विन्यास जे बियाह सँ बिधि भारी।

१०५ बुड़बक देवी कें कुरथी अच्छत

कैलासक ओहिठाम खैबाकाल सबकें नीक-नीक वस्तु आग्रह पर आग्रह कऽ-कऽ देलथिन्ह आ हमरा बेर मे साग आ मोटका चाउरक भाते टा रहलन्हि कहबी छैक जे बुड़िबक देवी कें कुर्थी अच्छत।

१०६ बैसल बुढ़िया दाव बतावै

कोनो काज करऽ कहबन्हि तइबेर मे अरसीमोन पानि

पढ़ि जैतन्हि मुदा लोक केँ अढ़ैबा मे बेस चतुर, कहबी छैक जे बैसल बुढ़िया दाव बतावै।

१०७ *बैसल सँ बेगारी नीक*

गाम पर भरि दिन बैसले रहैत छी जौं कनेक काल आबि कऽ एहि बच्चा सबकेँ पढ़ा देल करितियेक तँ बैसल सँ बेगारी नीक अहूँकेँ किछु भऽ जाइत।

१०८ *भूखले मोन पड़ै कोबराक खीर*

जहिया नोकरी करैत रहथि तहिया कहलियन्हि जे टका पैसा ओरिया राखू तँ रखबे ने कैलहि आ आब पछतबैत छथि जे—बड़ बेतुकार खर्च कऽ लेल, कहबी छैक जे भूखले मोन पड़ै कोबराक खीर।

१०९ *भाग्यवान केँ भूत कमाय*

अवध बाबू जौं भरिदिन बैसल रहियो जाथु तैयो बेटा-सब काज करबा मे लागल रहैत छन्हि ताहि, पर सुरेश कहलथिन्ह बुझल नहिं अछि जे भाग्यवान केँ भूत कमाय।

११० *भोजक काल मे कुमहड़ रोपब*

जखन ई बात जनैत छलाह जे आइ तोरा सासुर जैबाक छलह तखन तँ पहिने ने सब किछु ओरिया कऽ राखि-लीतह आ ई भोजक बेर मे कुमहड़ रोपऽ लगलह अछि।

१११ *भेल बियाह मोर करबह की*

जावत हमरा नामे सीतारामक जमीन छलन्हि तावत किछु नहि बजैत छलाह आ जहाँ हम लीखि देलियैन्हि-

की फनकऽ लगलाह क्रमपात एहेन सन, जेना भेल बियाह मोर करबह की।

११२ मारिक डर सँ भूत पड़ाय

एखन ओना पुछैत छिऔक तँ नहिं बजैत छँ आ जखन ऊपर सँ दस लात देबौक की अपने सबटा कहि देबेँ कहबी छैक जे मारिक डर सँ भूत पड़ाय तकरे परि हैतौक।

११३ मारी माछ ने उपछी पानि

कोना की लोक सँ रुपैया आनिकऽ काज करैत छथि कोना दैत छथन्हि से हम नहिं जनैत छियैन, मारी माछ ने उपछी पानि।

११४ मूनल मुँह मटकुड़िये सन

हिनका एहिठाम संच-मंच देखने ई नहिं बुझिऔन्हि जे ई बड़ सज्जन छथि ई बेस मूनल मुँह मटकुड़ी छथि।

११५ मूर पलटने नाचय साहु

दुर्गानन्द सँ सोनाइ ५०० पाँच सौ रुपैया सूद पर करजा लेलक मुदा कथीलै सूद देतैक जे मूरो पचैबा पर लागल छलन्हि मुदा जखन दै देलकन्हि तँ बाप कहलथिन्ह जाह हम छोड़ि दैत छियैक मूर पलटने नाचय साहु हम ओही सँ सन्तोष कैल।

११६ मूर्खक लाठी माँझ कपार

अपना मोन मे एको रत्ती विचार नहिं करैत छह जे-

ककरा कोन कथा कहियैक कोन कथा नहिं कहियैक सोझे मूर्खक लाठी माँझ कपार बजारि दैत छहक ।

११७ मोनक पैंच मोने निस्तार

हमरा आङन मे जाहि दिन मूड़न छल ताहि दिन सुरेशक बाप पाँच टा टका चुमौन देने रहथिन्ह हमहूँ हुनका बापक सराध मे पाँच टा टका चुमौन दऽ कऽ मोनक पैंच मोने निस्तार कैल ।

११८ राड़ केँ सुख बलाय

लत्ता कपड़ा भोजन आ दस टाका नगदी सेहो दऽ दैत छलियैन्हि मुदा हिनका तँ राड़ केँ सुख बलाय भेलन्हि, हमरा ओहिठाम सँ चल गेलाह ।

११९ लूटि लाबह कूटि खाह

मधुकान्त केँ आन मासक कोन कथा जे अगहनो मे लूटि लाबह कूटि खाह तहिना बितैत छन्हि ।

१२० लूरि ने भास तँ दैवक त्रास

जहाँ ककरो आङन मे पूजा होउक आ लोक गीत उठाबऽ रेमनी केँ कहौक की चट्ट दऽ शुरु कऽ देत, आ गाओल होइते ने रहैत छैक कहबी छैक जे लूरि ने भास दैवक त्रास ।

१२१ ले जनकपुर जान छोड़

हम तँ अपने एकरा लोकनि सँ अकच्छ भेल छी, मुदा एकरा लोकनि छोड़ै तखन ने एखनो सबटा सम्पति

छोड़ि दैत छियैक आ कहैत छियैक जे ले जनकपुर जान छोड़ सेहो ने करैत अछि।

१२२ *लातक देवता कतहु बात सँ मानय*

औ! सोझ मुहें एकरा लोकनि कहियो कोनो काज कैलक अछि जे आइ करत? लातक देवता कतहु बात सँ मानय।

१२३ *सड़लो भुन्ना तँ रोहुक दुन्ना*

हौ बाबू! मोहन पहलवान कतबो बूढ़ भऽ गेलह अछि तैयो एखन गाम मे क्यौ ओकरा सँ नहि जीति सकैत छहक, सड़लो भुन्ना तँ रोहुक दुन्ना।

१२४ *सगरो गाम ओझा चलब ककर सोझा*

सबहक तँ दू चारि टका पैंच रखनहिं छथिन्ह, आब जे ककरो सँ मङथिन्ह तकर मूँह छन्हि? सगरो गाम ओझा चलब ककर सोझाँ तकर परि छन्हि।

१२५ *सब धन बाइसे पसेरी*

उदित बाबू सँ जेना ठकि कऽ जमीन लिखा लेलियैन्हि तेना हमरो सँ लिखा लेब से नहिं हैत, जौं ई बूझैत होइ जे सब धन बाइसे पसेरी तँ से धारणा छोड़ि दीअऽ।

१२६ *साओन जनमला गीदड़ भादव ऐल बाढ़ि कहलथिन्ह एहन बाढ़ि ऐले ने छल।*

पन्द्रह वर्षक मोहन एहि बेरुक आम देखि कऽ बाजल जे पचास वर्ष सँ एहन आम नहिं फड़ल छल, ताहि पर बाबा कहि उठलथिन्ह तों कहिया देखलहक कहबी छैक-

जे साओन जनमला गीदड़ भादब ऐल बाढ़ि कहलथिन्ह जे एहेन बाढ़ि ऐले ने छल।

१२७ *साधुक मुंह कुकुर चाटै*

हम ई बूझि छोड़ि दैत छियैन जे ओ हमरा सँ श्रेष्ठ छथि, कथी लेल कोनो बातक उत्तर दिओन्हि, मुदा हुनका सब-कानि हमरे पर झाड़ल होइत छन्हि कहबी छैक जे साधुक मुंह कुकुर चाटै।

१२८ *सापो मरय लाठियो ने टूटय*

हमरा सँ जे लाभ होअऽ से करा लेल करह मुदा गाम मे जुनि देखार करह, कियैक तँ सापो मरय आ लाठियो ने टूटय।

१२९ *सूतल छी बियाह होइत अछि*

खेत मे जन सब काज करैत छन्हि, जा कऽ देखथिन्ह से होइते ने छन्हि आ आङन मे बैसल गप्प उड़ा रहल छथि कहबी छैक जे सूतल छी बियाह होइत अछि।

१३० *सोझे आङुर घी नहिं बहराय*

आइ काल्हि ई जे चाहब जे नीक लोक बनने काज भऽ जाय से नहिं हैत, आइ काल्हुक जमाना तेहेन छैक जे सोझ आङुरे घी नहिं बहराइत छैक।

१३१ *सुन्न चोट नेहाइक माथ*

सीताराम बाबू तमसैल छलथिन्ह जन पर आ मारि थापड़ सँ मुँह लाल कैलन्हि बेटा केर, कहबी छैक जे सुन्न चाट नेहाइक माथ।

१३२ *सोन मे सुगन्धि*

श्याम बाबू पहिने एक्के विषय केर एम० ए० छलाह आब तँ दूनू विषय मे एम० ए० कऽ लेलन्हि अछि सोन मे सुगन्धि भऽ गेलन्हि अछि।

१३३ *सोनक सोहागा*

राघबसिंहक मरिते देरी सबटा सम्पत्ति सोनक सोहागा भऽ गेलन्हि।

१३४ *संगक सुखे बनारस जाइ*

यद्यपि हम चारि दिनुका बाद गाम जैबाक विचार कैने छलहुँ मुदा अहाँ काल्हिए जंब तखन हमहूँ काल्हिए चलबऽ संगक सुखे बनारस जाइ।

१३५ *साँझे मुइला कानब कत्ते*

जौँ एहने चालि छन्हि तँ हम की करबन्हि आइ गारि देलकन्हि अछि काल्हि मारतन्हि साँझे मुइला कानब कत्ते।

१३६ *हरिनक गबाही सूगर देल दूनू पड़ाकऽ जंगल गेल*

महेश आ गोपेश केँ झगड़ा भेलन्हि, बाप लग पंचैती करबक लेल गेलाह; गोपेशक गवाही देबक लेल सुरेश ऐलथिन्ह ताहि पर बाप कहलथिन्ह जे हरिनक गवाही सूगर देल दूनू पड़ाक जंगल गेल।

१३७ *हरबड़ी बियाह कनपट्टी सिन्दूर*

कोनो काज करी तँ मोनकेँ स्थिर कऽ ली, आ ई हरबड़ी बियाह कनपट्टी सिन्दूर कऽकऽ नहि राखि देबक चाही।

१३८ *हारल नटुआ भिटुका बिछय*

किशोर बाबू जखन पटनो जाकऽ हारि गेलाह तखन करताह की तँ सोलह कऽ लेलन्हि, हारल नटुआ भिटुका बिछय तकरे परि भेलन्हि।

१३९ *होनिहार गाछक लुह लुहार पात*

हिनका सँ पढ़नाइ-लिखनाइ नहि पार लागि सकैत छन्हि से बुझबा मे आबि गेल कियैक तँ होनिहार गाछक लुह लुहार पात।

१४० *हाटक चाउर बाटक पानि*

आहाँ लोकनि केँ के कहलक अछि जे गजहड़ा बला केँ पाँच बिघा जमीन छैक ? ओकरा ओहिठाम तँ सब समाङ नोकरी करैत छैक, हाटक चाउर बाटक पानि सँ गुजर चलैत छैक।

१४१ *हाथी चलय बजार कुकुर भूकय हजार*

हम जाहि काज मे लागल छी से लगले रहब, हिनका लोकनि एहिना बजिते रहि जैताह ताहि लेल हम की करबन्हि हाथी चलय बजार कुकुर भूकय हजार।



अनेक शब्दक एक शब्द

१ अपना पैर पर ठाढ़ भेनिहार—स्वावलम्बी।

२ अभिनय कैनिहार—अभिनेता।

३ अधिक दिन धरि रहनिहार—चिरस्थायी।

४ अपन हत्या अपने कैनिहार—आत्मघाती, आत्महन्ता।

५ अपना मोने सेवा कैनिहार—स्वयंसेवी।

६ अनकर गल्ती ताकऽ बला—छिद्रान्वेषी।

७ अपना इच्छाक अनुसार चलनिहार—स्वेच्छाचारी।

८ अन्य देश —देशान्तर।

९ उपकारक बदला मे कैल गेल उपकार—प्रत्युपकार।

१० अर्जुनक पुत्र —आर्जुनी।

११ आँखिक सामने —समक्ष।

१२ आकाश मे चलनिहार— आकाशगामी, खेचर।

१३ आगाँ रहनिहार—अगुआ।

१४ आकाश केँ छूनिहार—गगनचुम्बी।

१५ आँखिक पाछू—परोक्ष।

१६ आगाँ जन्म नेनिहार—अग्रज।

१७ इन्द्र केँ जितनिहार—इन्द्रजित, मेघनाद।

१८ ईश्वर क अधीन—इश्वराधीन।

१९ इतिहास जननिहार—इतिहासज्ञ।

२० ईश्वर मे विश्वास रखनिहार—आस्तिक।

२१ ईश्वर मे विश्वास नहिं रखनिहार—**नास्तिक** ।

२२ जकर स्वामी मरिगेल हो—**राँड़, विधवा** ।

२३ जकरा कोनो सन्तान नहिं होइक—**निःसन्तान** ।

२४ जकरा पुत्र नहिं होइक—**निपुत्र** ।

२५ जकर बुद्धि कुशक नोकसन तेज हो—**कुशाग्रबुद्धी** ।

२६ जनबाक इच्छा—**जिज्ञासा** ।

२७ जकर स्वामी जिबैत हो—**सधवा, ऐहब** ।

२८ जकर प्रतिज्ञा दृढ़ हो—**दृढ़ प्रतिज्ञ** ।

२९ जकर उल्लेख कैलजा सकय—**उल्लेखनीय** ।

३० जकर शत्रु नहिं जनमल हो—**अजातशत्रु** ।

३१ जकरा लगले फुरि जाइक—**प्रत्युत्पन्नमति** ।

३२ जकर शासन संसार भरि मे हो—**चक्रवर्ती** ।

३३ जकर दृष्टि दूर धरि जाइक – **दूरदर्शी** ।

३४ जकरा सन्तान नहिं होइत होइक – **बाँझ** ।

३५ जकर उपमा नहिं देल जा सकय – **अनुपमेय** ।

३६ जकर अंग प्रत्यंग सड़ल हो – **गलिताङ्ग** ।

३७ जकर बाँहि जांघ धरि हो – **अजानुबाँहु** ।

३८ जकर बियाह उपनयन नहिं भेल होइक—**कुमार** ।

३९ जकर माय कनिञटा मे मरि गेल हो—**मइटुगर** ।

४० जल मे उत्पन्न होमऽ बला—**जलज** ।

४१ जाहि स्त्री केँ सन्तान नहिं भेल होइक – **अपसुइया** ।

४२ जाहि खेत मे हर नहिं लागल होइक – **अफार** ।

४३ जाहि महिंस के बच्चा भेना बेसी दिन भेल होइक आ लगैत हो – **बकेन** ।

४४ जाहि पुरुषक स्त्री मरि गेल होइक – **बिधुर** ।

४५ जाहि कन्याक विवाह नहिं भेल होइक – **कुमारि** ।

४६ जाहि स्त्रीक पति विदेश मे हो – '**प्रोषित पतिका** ।

४७ जे उपकार केँ मोन राखय – **कृतज्ञ** ।

४८ जे उपकार केँ मोन नहिं राखय – **कृतघ्न** ।

४९ जे सब केँ समान रूपें देखै – **समदर्शी** ।

५० जे मन देने अछि – **दत्तचित्त** ।

५१ जे सहन नहिं कैल जासकय – **असह्य** ।

५२ जे सहजहिं पचि जाय – **लघुपाकी** ।

५३ जे बड़ खाय – **खाधुर, पेटू** ।

५४ जे कहल नहिं जा सकय – **अकथनीय** ।

५५ जे बहुत दिन जीबै – **चिरंजिवी** ।

५६ जे प्राचीन काल सँ आबि रहल हो – **पुरातन** ।

५७ जे विदेश मे रहैत हो – **प्रवासी** ।

५८ जे कम आयु मे मरि जाय – **अल्पायु** ।

५९ जे बेरि-बेरि कहल जाय – **पुनरुक्ति** ।

६० जे बड़ बाजय – **फँचाड़ि** ।

६१ जे सभ ठाम हो – **सर्वव्यापी** ।

६२ जे स्त्री सूर्य केँ कहियो ने देखय – **असूर्यम्पश्या** ।

६४ जे चिरकाल सँ आबि रहल हो – **चिरंतन** ।

६५ जे मधुर बाजय – **मधुरभाषी** ।

६६ जे नहिं मेटा सकय – **अमिट** ।

६७ कोनो काज मे दोसरा सँ बढ़ि जैबाक इच्छा – **प्रतिस्पर्धा** ।

६८ कृष्णक पुत्र – **कर्णि** ।

६९ कुत्सित अछि जे अन्न – **कदन्न** ।

७० गयबाक योग्य – **गेय** ।

७१ गाँव मे बसनिहार – **ग्रामीण** ।

७२ गणित शास्त्रक पंडित… **गणितज्ञ** ।

७३ पैर रखबाक स्थान… **पौथान** ।

७४ पृथुक पुत्र… **पार्थव** ।

७५ पूब भरक… **पुबरिया** ।

७६ पाछाँ जन्म नेनिहार… **अनुज** ।

७७ पाँच तत्त्व सँ बनल… **पंचभौतिक** ।

७८ पीबाक इच्छा… **पिपासा, पियास** ।

७९ पैबाक इच्छा… **लिप्सा** ।

८० पैर सँ माथ धरि… **आपादमस्तक** ।

८१ नगर मे रहनिहार… **नागरिक** ।

८२ दर्शन शास्त्रक पंडित… **दार्शनिक** ।

८३ शक्तिक उपासक… **शाक्त** ।

८४ शिवक उपासक… **शैव** ।

८५ विष्णुक उपासक… **वैष्णव** ।

८६ सौतिनिक बेटा… **सतौत** ।

८७ सिंहक चिन्हबला आसन… **सिंहासन** ।

८८ मांस खा कऽ रहनिहार… **मांसाहारी** ।

८९ लोभ मे फसल…लोभग्रस्त ।

९० राति मे घूमऽ बला…रतिचर ।

९१ बिना पपनी खसौने…निर्निमेष ।

९२ सासुक सासु…अजिया सासु ।

९३ साग खा कऽ रहनिहार…शाकाहारी ।

९४ स्वयं उत्पन्न भेनिहार…स्वयंभू ।

९५ न्याय शास्त्रक पंडित…नैयायिक ।

९६ सूइ सँ भेदन करबाक योग्य…सूचि भेदक ।

९७ विज्ञान जननिहार…वैज्ञानिक ।

९८ सांख्य शास्त्रक जननिहार…सांख्यज्ञ ।

९९ शास्त्र जननिहार…शास्त्रज्ञ ।

१०० पैर सँ पीनिहार…पादप ।

१०१ घास खा कय रहनिहार…तृण भोजी ।

१०२ हिमालय सँ समुद्र धरि…आसेतु हिमालय ।

१०३ की करी की नहिं करी…किंकर्त्तव्य ।

१०४ बजबाक इच्छा…विवक्षा ।

१०५ संसार भरिक भरण-पोषण करऽ बला…विश्वम्भर ।

१०६ सात ऋषिक सम्महार…सप्तर्षि ।

१०७ अनुचित बातक लेल हठ…दुराग्रह ।

१०८ इच्छाक अधीन…ऐच्छिक, वैकल्पिक ।

१०९ जे बढ़ा चढ़ाकय कहल जाय…अत्युक्ति ।

११० जे दोसराक स्थान मे अस्थायी रुपें कार्य करय… स्थानापन्न ।

१११ जे एक स्थान सं दोसर स्थानपर चलगेल होथि…स्थानान्तरित

११२ हृदय विदीर्ण कैनिहार…हृदय विदारक ।

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द ।

कलि चारिम युग ।

कलो...कोंढ़ो ।

पिक....कोइली ।

पीक...पानक थूक ।

अंश....हिस्सा ।

अंस . कान्ह ।

बलि''''उपहार ।

बली...बलवान ।

सूत ...सारथी, ताग ।

सुत बेटा ।

चिर....बहुकाल ।

चीर...वस्त्र ।

कुल...वंश ।

कूल...नदीक तीर ।

असक्त....शक्ति सँ रहित ।

आशक्त....लीन ।

जड़ि....वृक्ष-मूल ।

जड़ी....व्याधि नाशक वृक्ष ।

जनि...,.उत्प्रेक्षा व्यञ्जक ।

जनी...स्त्री जाति ।

चानि...माथक उपरका भाग।

चानी....धातु (रूपा)

चालि...गति, स्वभाव।

चाली....कृमि।

घोर...दहीक पानि, व्याकुल।

घोड़...घोड़ा।

घाटि...घाटा।

घाठि....बेसन।

घानि...खानि, बेसी।

घानी भुजबाक वा कुटबाक योग्य बहार कैल अन्न।

आचार...रहन-सहन।

अँचार....आम आदिक लवण सहित।

कानि....सञ्चित कोप।

कानी....कान लग राखल केस जे छटौल हो।

काँति...शोभा।

काँती....छोट खड्ग।

काड़ा....पैरक गहना।

काढ़ा....तुलसी पात आदि केँ जल मे गलौल रस।

सर....सरोवर।

शर...वाण।

शुल्क...फीस।

शुक्ल...श्वेत।

अनल....आगि ।

अनिल....हवा ।

काच...शीशा ।

काँच....जे पाकल नहिं ।

पाक....भोजन ।

पाँक....थाल ।

डोरि...अरघनी ।

डोरी....जौड़ ।

नीर....जल ।

नीड़....खोंता ।

चारु...सुन्दर ।

चारू....चारि टा ।

कालि....दोषी ।

कालिह....आबऽ बला वा बीतल दिन ।

टाट....बेढ़ ।

टाँट...सुखँल ।

जोर...बल ।

जोड़... बन्धन ।

दिन...सूर्योदय सँ सूर्यास्त पर्यन्तक समय ।

दीन....गरीब ।

पुरान...प्राचीन ।

पुराण....ग्रन्थ ।

भुजा....बाँहि ।

भूजा...(चाउर, चूड़ा, खापरि मे भूजल) ·

अदत्त....कंजूस ।

अदन्त....विनु दंतल ।

अरिआ...एक आरि मे रहऽ बला ।

अणिआ... अण्ड कोष युक्त ।

भजाएब....समान मूल्यक अनेक छोट मुद्रा सँ बदलब ।

भँजिऐब...ताकब ।

काँट....कण्टक ।

काट . डाह, ईर्ष्या ।

एना...एहि तरहेँ ।

ऐना...प्रतिविम्ब देखऽबला शीशा ।

कटहर ..गाछ मे पड़ऽबला फल ।

कड़हर....पानि मे होमऽ बला कन्द ।

ताक...अवसर ।

ताख...देवाल पर बनौल स्थान ।

पूड़ा ...नाकक पूड़ा, मखानक पूड़ा ।

पूरा....पूर्ण ।

खर....विशेष रूपे सुखैल, गदहा ।

खढ़...घास ।

डोरा....ताग ।

डोंड़ा ...गहींड़ खेत ।

बिड़ार...जाहि मे बिया बौग कैलजाय ।

बिलाड़....एक जीब ।

सरल...आसान ।

सड़ल....पाकि कऽ सड़ि जैब ।

राड़....छोट जाति ।

राँड़...विधवा ।

कूड़ा...घर आङन साफ कैला पर बहरैल गन्दगी ।

कूँड़ा····घैलक दोसर रूप ।

कनिञा....नव विवाहिता स्त्री ।

कनिञो....कम्मे ।

नाश – नष्ट ।

नास – हरक अग्रभाग ।

नाव – तरणि ।

नाँव – नाम ।

निसा – राति ।

निसाँ – नसा ।

परता – जकर उपयोग नहिं भेल हो ।

परताँ – बाद ।

पातर – कृश ।

पाँतर – बेसी दूरक निर्जन बाट ।

हटब – स्थान छोड़ब ।

हँटब – रोकब ।

बाट – पथ ।

बाँट – बखरा करब ।

पाच – त्वचा मे विशेष रूप सँ पचैब ।

पाँच – संख्या ।

बास – निवास ।

बाँस – बंशवृक्ष ।

बाझ – एक चिड़ै ।

बाँझ – बन्ध्या ।

फाट – दड़ारि ।

फाँट – हिस्सा ।

आक—वृक्ष विशेष ।

आँक—अंक ।

खोर—बड़का तौला ।

खोंड़—किञ्चित त्रुटि !

कोरा—गोदी, कोरा धोती !

कोड़ा—घोड़ा कें मारऽबला अस्त्र !

चारि—संख्या !

चाड़ि—काजक चाड़ि !

कोढ़ि—जकरा चलि नहिं होइक !

कोंढ़ी—फूलक कोंढ़ीं !

डारि—वृक्षक डारि !

डाँड़ि—लकीर !

पोआ — साँपक बच्चा !

पौआ — सेरक चतुर्थांश !

पासि — खाटक वा चौकीक पाइस !

पासी — एक जाति जे तारी चुआवै !

खरि—तेलहन अन्न सँ तेल बहार कैलाक बादक अंश !

खड़ी — ककरो आगमनक सूचना प्राप्त करक ढंग !

बासि—रातुक रान्हल अन्न !

बाइस—संख्या !

फेर — पुनः !

फेंड़—गाछक पैघ डारि !

भागल—पड़ैल !

भाङल—विभाजित कैल !

परसन—दोसरो बेर लेब !

प्रसन्न — आनन्द !

मालि—फूलक खेती करऽबला जाति !

माली—माली मे तेल रहैत छैक !

काइल—दोषी !

काली—भगबतीक नाम !

बोरा — धान आदि राखक ।

बोड़ा — लत्ती मे फड़ऽ बला तरकारी !

बड़ेरी — जाहि पर चार अटकल हो !

बड़हरी — गहना विशेष !

द्वयर्थक

१ माल—चर्खाक माल टुटि गेने तीन दिन सँ चर्खा पड़ल अछि ।
गामक माल सौंसे खड़होरि चरि गेल ।

२ ढील—धोती ढील क पहिरने लद-फद लगैत अछि ।
माथ मे ततेक ढील फड़ि गेल अछि जे कुड़ियाति रहैत अछि ।

३ डाँड़—बूढ़ भेने डाँड़ झूकब स्वभाविके छैक ।
हमरा ओइठाम तँ अहाँ लोकनि कें खर्च मे डाँड़े लागत ।

४ डांट—हमरा लग मे एना डाँट फटकार नहिं करहक ।
सागक डाँट पात सब रान्हि लेला सँ स्वादिष्ट होइत छैक ।

५ धार—हाँसूक धार भोथ भऽ गेलैक अछि ।
धार मे पानि बढ़ि गेने जैबाक लेल नाव राखऽ पड़त ।

६ मान—सासुर मे जखन मान नहिं भेलह तखन आर हैतह कोन ठाम ।
आङुर मे मान ओदड़ि गेल अछि से ततेक दुखाइत अछि जे भरि दिन तबाह रहैत छी ।

७ राइस—डिबियाक राइस नाक मे लगला सँ स्वास्थ्य पर खराब प्रभाव पड़ैत छैक ।

बड़द के राइस लगौने रहS नहिं तं भागि जैतह।
आहाँक जन्म कोन राइस मे भेल अछि से नहिं
जानि।

८ साम—ढेकीक साम खिया गेलैक अछि।
एहि खेत मे साम नहि नीक जकाँ उपजल।

९ कोर—नेना केँ माइक कोर बड़ सुखद होइत छैक।
धोती मे सिकिया कोर बला नीक होइत छैक।

१० मूर—मूरक तरकारी बिनु घेराक केहनो ने।
पहिला सालक धान जकरा जकरा देलियैक से सब
तँ मूरो पचा लेलक।

११ अजबाड़ल-थारी अजबाड़ल अछि (खाली कैल अछि)।
सूप अजबाड़ल अछि (बाभल अछि)।

१२ भीड़—पोखरिक भीड़ पर कदमक गाछ छैक।
हमरा भीड़ अैताह तँ मारिए खताह।
महादेबक मन्दिर पर लोकक भीड़ लागल छैक।
लोकके जखन अपना पर भीड़ पड़ैत छैक तखन
बुझबा मे आबैत छैक।

१३ टाल—नारक टाल लगा लीअS ने तँ पानि भेला पर सड़ि
जैत।
कुजड़नीक तराजू पर ध्यान देने रहबैक ने तँ टाल
मारि लेत।

१४ हाल—खेत क हाल फाटि गेने हर नहि लागत।
हम अपन हाल की कहू।
गाड़ीक पहियाक हाल टूटि गेल छैक।
ई जमीन हाले मे लेल अछि।

१५ भार—अनकर भार हम कियैक उठाउ।
सासुर सँ तीन टा केरा, दहीक भार ऐल अछि।

१६ भजैत—रुपैया भजेत अछि तऽ अहाँक कैंचा दऽ देब।
हम ककरा भजैत नहिं छियैन अहीं भऽ जाउ।
दलान पर बैसल भगवानक नाम भजैत रहू।

१७ डोल—पनिभारा डोल फुटि गेल अछि।
डावा मे दूध डोल माल करैत अछि।

१८ बरही—गाम मे एक्को घर बरही नहिं छेक।
बरही नेने ऐब खेत चौकिएबाक अछि।

१९ खिल्ली—पानक खिल्ली नीक जकाँ मोड़ह।
खिल्ली तोड़ि देबनि तँ सब जोरगरिक दावी घोंस-ड़ि जैतन्हि।

२० कतरा—हमरा सुपारीक कतरा कऽ कऽ दीअऽ।
कतराक झाड़क झाड़ नीक होइत छेक।

२१ खड़रा—मालक घर साफ करक लेल खड़रा नहिं छैक।
पैर मे खड़रा घाव भऽ गेल अछि।

२२ फुलकी—पाहुन लेल फुलकी छानि दिश्रौन्हि।
कुसियार मे फुलकी भऽ गेलैक अछि।

२३ फूंटि — बलुआह जमीन मे फुंटि बड़ होइत छैक।
सोहारी मे बदामक फूंटि भरि दहक।

२४ घोघ—अपना मोन मे बिचार नहि जे भैंसुर ठाढ़ छथि
घोघ काढ़ लो।
परबाक घोघ मे दाना भरल छैक।

२५ बड़—महादेबक मन्दिर पर बड़क गाछ छन्हि।
तोरा ओहिठामक भोज मे बड़ नहिं बनलह।

२६ नाम—अहाँक की नाम थीक ?
हम पाँच हाथ नाम छी।

२७ चाट—जखन तमाकूक चाट लागि जैत तं किन्नहुँ ने छूटत।
राम से चाट मारलक जे गाल पर पाँचो आङ्गुर
उखड़ि गेल।

२८ चौकी—दलान पर बैसक लेल चौकी देल छैक।
खेत मे आब चौकी दऽ दहक।

२९ चाकर—हमर घर खूब चाकर अछि।
रमेश के एक्को टा चाकर नहि छन्हि।

३० पाल—कलकतिया आम पाल परहक नीक होइत छैक।
नाव मे पाल लगा देला सं सुविधा होइत छैक।

३१ पट्टा—हमरे संग बाँहि-पट्टा खेला रहला अछि।

जाँतक पट्टा उठा दिऔक।

३२ जेठ—उमाकान्त सब सँ जेठ छथिन्ह।

जेठ मास पानि नहि भेल।

३३ ढक—ढक मे धान भरल अछि।

आहाँ अपने मोने तखन सँ की ढकने जाइत छी।

साइकिलक ढक कसि दिऔक।

३४ छत्ता—रौद मे छत्ता लऽ कऽ जाह।

बिरनीक छत्ता मे बच्चा छैक।

३५ ठेला—हाथ मे ठेला पड़ल अछि।

गाड़ी मे ततेक मेला ठेला छैक जे ससरक जगह नहिं छैक।

३६ चीरचीरी—चीरचीरीक दातमनि लाभदायक होइत छैक।

भूठे की चीरचीरी पाड़ैत छह।

३७ गोल—वैज्ञानिकक कहब छैक जे पृथ्वी गोल अछि।

चारि घरक टोल मे चारि गोल भेल अछि।

३८ परि—अहाँ के तँ रामे बाबूक परि अछि।

हमरा जे परि लागत से कोना?

३९ डोर—डोर पर धोती पसारि दिऔक।

डोर सिन्दुर ऐलाक बाद ने दिनक निश्चय हैतैक।

४० पार—आइ दूधक पार हमर नहिं अछि ।
हमर सभटा सामान पार भऽ गेल ।

४१ घोर—एकरा सबहक दुआरे मोन घोर भेल रहैत अछि ।
दहीक घोर बना कऽ पीबु तँ ठंढक हैत ।

४२ लीख—लीख धरा कऽ गाड़ी हाँकू ।
माथ मे लीख फड़ि गेल अछि ।

४३ दाबि—एक्के दाबि सँ सबके लाड़ि दैत छियैक ।
हमर वस्तु सबटा दाबि रखलन्हि ।

४४ धूर—अहाँ चारि दिन हर जोतने छी, आ दू दिन हम, तैं
हमर दू टा धूर बाँकी रहल ।
धूर पर राहड़ि टोभि दिऔक ।





मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा
ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा

(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitalization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learning has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age represented by legends like Pandit Surendra Jha Suman and Pandit Chandranath Mishra Amar. Acclaimed Maithili author and researcher Dr Ramdeo Jha has been kind enough to allow access to his rich personal library for digitalization.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yaduvar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha' Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha,

Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra, Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was widely felt that books in Maithili are not widely available despite their huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu KC Mishra, Mukund Jha Bakshi, Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy an dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society to an extent that people started calling Mithila Research Society as Murda Club; a dead organisation. That was a huge loss for Mithila.

But this was revived around year 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha
9470369195, 8877213104 vijaydeojha@gmail.com

॥ श्री ॥



॥ बिज्ञापन ॥



मिथिलारिसर्चसोसाइटी

सम्यगुद्योगशीलस्य सहायः स्वयमीश्वरः ।

१ दरभङ्गामें एक सभा 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' (मिथिला तत्व विमर्षिणी) नामक लग भग डेढ़ वर्ष सँ अछि । (१) संस्कृत विद्याक पठन पाठन बढ़ायब; (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तेकर अन्वेषण ओ मुद्रित करब; मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान् ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब; (४) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तुसभक अन्वेषण ओ यथा साध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा करब, (५) देशाचारानुसार आओर आओरो विषयक उन्नति करब, उक्तसभाक उद्देश्य छैक । एकर निर्वाह सकल साधारणक सहाय व्यतिरेक सम्भव नहिं । रिसर्च सोसाइटीक प्रार्थना जे मैथिलभ्रातृगण स्वोन्नतिमें प्रवृत्त होथि, परस्पर सहायता करथि, उपसभा नियुक्त कय रिसर्च सोसाइटीक साहिय करथि ।

२ एहि वर्ष इहो विचार भेलअछिजे एहि सभाक द्वारा निरीक्षण पूर्वक प्राचीन दुर्लभपुस्तक मुद्रित कयलजाय । एक दुइ व्यक्ति अपना अपना द्रव्यसँ पुस्तक छपयवापर उद्यतछथि। ओ एहिसभाक द्वारा छपाओलजायत । परन्तु एक दुइ व्यक्तिक साध्य एहनभारी कार्य नहिं, एकर तीनि उपाय छैक—

(१) श्रीमान् लोकनि द्रव्यक सहायता करथि, ताहि द्रव्यें उक्तसभाक द्वारा पुस्तक छपाओलजाय, एहि पुस्तक पर स्वत्व मिथिला रिसर्च सोसाइटीक रहैक पुस्तक विक्रय हो, तल्लब्ध द्रव्य मिथिला देशक उपकारार्थ व्यय हो । (२) अथवा श्रीमान् लोकनि अपना द्रव्यें एहि सभाक द्वारा पुस्तक छपावथि, सभाक दिशसँ प्राचीन दुर्लभ पुस्तक एकत्र कयल जाय, गृहीत पुस्तकक प्रूफ देखल जाय ओ मुद्रण कयल जाय । एहि परिश्रमक बदलामें दशांश मुद्रित पुस्तक अथवा उचित द्रव्य एहि सोसाइटीकें उक्त श्रीमान देथिन्ह। (३) अथवा जे कोनो पुस्तक रिसर्च सोसाइटीक दिशसँ छपय तकर ग्राहकरूपें उक्त सोसाइटीक सहायता श्रीमान् लोकनि करथि, समुचित द्रव्य दय पुस्तक खरीद करथि ।

३ रिसर्च सोसाइटीक संरक्षक विविध विरुदावली विराजमान मानोन्नत महाराजाधिराज श्रीमान् मिथिलेश तथा श्रीमान् बाबू शारदाचरण मित्र जज कलकत्ता हाइकोर्ट,—छथि । ओ दरभङ्गाक कलैक्टर साहबसँ प्रार्थना कयलगेल अछि जे ओ सभापति होथि । बाबू श्रीतुलापतिसिंह, बाबू श्री विन्ध्यनाथ झा बी० ए०, बाबू श्री गङ्गानाथझा ऐम० ए०, बाबू श्री विन्ध्येश्वरीप्रसादसिंहजी, श्री काली बाबू डाक्टर, महामहोपाध्याय पं० श्री चित्रधर मिश्र, कवीश्वर पण्डित श्रीचन्द्र झा, वैयाकरण केसरी पं० श्री परमेश्वर झा इत्यादि सभासद्गणमें सँ छथि ।

४ रिसर्च सोसाइटीक मेम्बर हयबाक निमित्त फीस एकरुपैया नियत कयलगेल अछि ।

५ उक्त विषय सम्बन्धमें जाहि महाशय कें पत्राचार करबाक होइन्ह से निम्न लिखित सेक्रेटरी सँ करथि ।

दरभङ्गा
अगस्त १९०६

श्री केशो मिश्र बी० ए०
सेक्रेटरी मिथिलारिसर्चसोसाइटी
दरभंगा ।

मैथिली छात्रक हेतु उत्कृष्ट सहायक पोथी—

१. मैथिली साहित्यक प्रमुख कवि—प्रो॰मेधातिथि २)
२. ,, निबन्ध निकुञ्ज—प्रो॰ परमानन्द झा २।)
३. ,, नवनिबन्धावली— ,, २॥)
४. ,, साहित्यक संक्षिप्त इतिहास····प्रो॰ रामदेव झा(प्रेसमे)
५. ,, मुहावरा एवं लोकोक्ति प्रकाश रमानाथ मिश्र 'मिहिर' १।)
६. कीचक बध एक अध्ययन····अनुभवी प्रोफेसर १॥)
७. पार्वती परिणय एक अध्ययन···· ,, ,, १=)
८. शकुन्तला नाटक एक अध्ययन···· ,, ,, १=)
९. कविता-कुसुम आलोक ,, १।)
१०. प्री-युनिवर्सिटी भरनाकुलर डाइजेस्ट—,, २)
११. ,, प्रिंसपल मैथिली ,, ,, २)
१२. इन्टरप्रिंसपल मैथिली डाइजेस्ट··· ,, २।)
१३. एकावली परिणय एक अध्ययन···· ,, २)
१४. विद्यापति गीत संग्रह एक अध्ययन—,, ,,
१५. प्रतिपदा एक अध्ययन प्रो॰ नवीन चन्द्र मिश्र २।)
१६. भागलपुरयूनिभरसीटी प्राक मैथिली पद्य संग्रह आलोक— १)
१७. ,, ,, ,, गद्य संग्रह आलोक (प्रेस में)
१८. प्रिंसपल मै॰ डाइजेस्ट डिग्री पार्ट I— (प्रेस में)
१९. भर्नाकुलर मै॰ डाइजेस्ट ,, ,, I— २)

प्राप्ति स्थान :—

अन्यत्रः— **ग्रन्थालय, दरभंगा**

स्थानीय सब पुस्तक विक्रेतासँ प्राप्य ।